A Daily News Magazine
भोपाल
रविवार, 12 जनवरी, 2025

सुबह सवेरे

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष -22 अंक-133 नगर संस्करण, पृष्ठ -8, मूल्य रू.- 2 (डाक पंजीयन संख्या: म.प्र./भोपाल/4-391/2018-20)

subahsaverenews@gmailĐcom
facebookĐcom/subahsaverenews
wwwĐsubahsavereĐnews
twitterĐcom/subahsaverenews

सुप्रभात

क्या दु:ख है समुंदर को
बता भी नहीं सकता
आँसू की तरह आँख
तक आ भी नहीं सकता।

तू छोड़ रहा है तो ख़ता
इस में तिरी क्या
हर शख्स मिरा साथ
निभा भी नहीं सकता।

प्यासे रहे जाते हैं
ज़माने के सवालात
किस के लिए ज़िंदा हूँ
बता भी नहीं सकता।

घर ढूँढ रहे हैं मिरा
रातों के पुजारी
मैं हूँ कि चराग़ों को
बुझा भी नहीं सकता।

वैसे तो इक आँसू ही
बहा कर मुझे ले जाए
ऐसे कोई तूफ़ान हिला
भी नहीं सकता।

– वसीम बरेलवी

ब्लॉग

स्वामी विवेकानंद युवा शक्ति मिशन: संवाद, सामर्थ्य और समृद्धि की त्रिवेणी

डॉ. मोहन यादव

युवाओं की मेधा, शक्ति को जाग्रत करने वाले स्वामी विवेकानंद जी ने कहा था, 'उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए' विवेकानंद जी युवाओं को आशा और उम्मीद से देखते थे और युवा पीढ़ी को परिवर्तन का अग्रदूत मानते थे। स्वामी जी के लिये राष्ट्रकवि श्री रामधारी सिंह दिनकर ने अपनी पुस्तक 'संस्कृति के चार अध्याय' में लिखा कि अभिनव भारत को जो कुछ कहना था, वह विवेकानंद के मुख से उद्घोषित हुआ। अभिनव भारत को जिस दिशा में जाना था, उसका स्पष्ट संदेश विवेकानंद ने दिया। विवेकानंद वह सेतु हैं जिस पर प्राचीन और नवीन भारत परस्पर आलिंगन करते हैं। युवा शक्ति को राष्ट्र की मूलभूत चेतना और समाज निर्माण की ऊर्जा मानने वाले स्वामी विवेकानंद जी की जयंती 'राष्ट्रीय युवा दिवस' पर उनके चरणों में शत-शत नमन।

हमारे मार्गदर्शक यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने युवा पीढ़ी की क्षमता को जाना, समझा और ज्ञान (GYAN) पर ध्यान का मार्गदर्शन दिया। इसमें 'जी' से गरीब, 'वाय' से युवा, 'ए' से अन्नदाता और 'एन' से नारी कल्याण की बात कही। उन्होंने युवाओं के लिये अनुशासन, शील, सकारात्मकता, कौशल क्षमता और प्रतिभा के विकास का आह्वान किया। मुझे यह बताते हुए प्रसन्नता है कि प्रधानमंत्री जी की प्रेरणा से हम मध्यप्रदेश में आज से 'स्वामी विवेकानंद युवा शक्ति मिशन' की शुरुआत कर रहे हैं।

हमने इस मिशन को 'ज्ञान (ज्ञान) पर ध्यान और मध्यप्रदेश की 'युवा नीति-2023' को केन्द्र में रखकर आकार दिया है। इसका उद्देश्य युवाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, कौशल विकास, मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य, रोज़गार के अवसर और सामाजिक जिम्मेदारी के प्रति जागरूक करना है। यह मिशन शहरी तथा ग्रामीण, पिछड़े और आर्थिक-सामाजिक रूप से कमजोर वर्ग के युवाओं के कल्याण के लिये है। इसमें महिलाओं, दिव्यांग, युवाओं और किसानों को सशक्त बनाने का प्रयास है।

हमने युवाओं के विकास के लिये विभिन्न मोर्चो पर काम शुरू किया है। युवाओं के लिये विभिन्न विभागों में शासकीय नौकरी की प्रक्रिया प्रारंभ कर दी गई है। शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा के लिये 55 पीएमश्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस शुरू किये गये हैं। चिकित्सा शिक्षा के लिये आयुर्वेदिक, एलोपैथिक और होम्योपैथिक तीनों क्षेत्रों में कार्य किया जा रहा है। विगत वर्ष हमने तीन मेडिकल कॉलेज शुरू किये हैं। मुझे यह बताते हुए आनंद है कि पीपीपी मोड पर 2 साल में 25 नये मेडिकल कॉलेज आरंभ किये जायेंगे। औद्योगिकरण में रोज़गारपरक व्यवस्थाओं के लिये प्रदेश के विभिन्न अंचलों में आयोजित की जा रही रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव का बड़ा आधार युवा शक्ति है। रीवा, उज्जैन, सहित अन्य आईटी पार्कों के माध्यम से युवाओं को अपनी योग्यता और क्षमता के आधार पर प्रदेश में ही रोज़गार के अवसर उपलब्ध हुए हैं।

'स्वामी विवेकानंद युवा शक्ति मिशन' में युवाओं के कौशल संवर्धन पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। कौशल विश्वविद्यालय की स्थापना से रोज़गार के लिए आवश्यक दक्षताओं का विकास किया जाएगा। पर्यटन, कृषि और सेवा क्षेत्रों में कौशल विकास के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम होंगे। इसके अलावा, युवाओं में उद्यमिता को प्रोत्साहित करने और स्थानीय स्तर पर रोज़गार के अवसर उपलब्ध कराने के लिए विभिन्न योजनाएं लागू की जाएंगी। युवाओं को पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध जागरूकता और राष्ट्र की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा। खेल और सांस्कृतिक गतिविधियों से उनके मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के प्रयास किए जाएंगे।

युवा शक्ति मिशन 'आत्म दीपो भवः' का घोष है। युवाओं के विकास और निर्माण के लिये जिन पक्षों को धरातल पर उतारने का प्रयास किया जा रहा है, वर्षों पूर्व स्वामी विवेकानंद जी ने युवाओं की इसी क्षमता और मेधा को लेकर आह्वान किया था 'आत्म दीपो भवः' अर्थात् अपना दीप स्वयं बनो। स्वयं अपने मार्गदर्शक बनो। युवाओं की ऊर्जा के सकारात्मक भाव से ही राष्ट्र की सुरक्षा, समृद्धि के साथ विकास आकार ले सकता है। यह युवाओं की श्रम साधना और कौशल उन्नयन से संभव है।

प्रधानमंत्री जी ने युवा समूह के लिये समुचित प्रोत्साहन की आवश्यकता बताई। यह सुखद संयोग है कि भारत में 15 से 29 वर्ष के युवाओं की संख्या 27.03 प्रतिशत है। यदि युवा सक्षम हैं, सामर्थ्यवान हैं, आत्मनिर्भर हैं तो पूरा समाज और देश उन्नत होगा। स्वामी विवेकानंद जी की इसी बात को ध्यान में रखकर 'स्वामी विवेकानंद युवा शक्ति मिशन' के तहत युवाओं में शिक्षा, कौशल विकास और सामुदायिक सेवा जैसे गुणों को विकसित किया जायेगा और उन्हें सक्षम बनाया जायेगा। इसमें युवाओं को नेतृत्ववान बनाने के लिये संसाधन और अवसर होंगे। युवाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और व्यावसायिक कौशल से प्रशिक्षित कर उन्हें रोज़गार के लिये सक्षम बनाया जायेगा।

मिशन के स्तंभ हैं- संवाद, सामर्थ्य और समृद्धि। संवाद से आत्मविश्वास और नेतृत्व की क्षमता विकसित होगी। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, क्षमता संवर्धन और कौशल विकास से सामर्थ्य विकसित होगा और सामर्थ्यवान युवा समृद्ध होगा।

हमारे लिये यह हर्ष की बात है कि इस मिशन से युवा, स्वामी विवेकानंद जी के आह्वान को सार्थक करने की दिशा में आगे बढ़ सकेंगे। वे भगवान श्रीकृष्ण की तरह स्वयं दीप बनेंगे और समाज को भी अपनी ऊर्जा और क्षमता से उज्ज्वल करेंगे। स्वामी जी ने युवाओं के लिये कहा था कि 'आप भारतीय संस्कृति की विराट विरासत और परंपरा के उत्तराधिकारी हैं।' हम विरासत से विकास की अवधारणा को लेकर मध्यप्रदेश के विकास और निर्माण पथ पर अग्रसर हैं।

मुझे विश्वास है कि यह मिशन युवाओं के सपनों को साकार करने और समाज में सकारात्मक बदलाव लाने में सफल होगा। प्राचीन, सुसंस्कृत और चिर युवा भारत की यह त्रिवेणी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के विकसित राष्ट्र निर्माण के संकल्प को साकार करने में सक्रिय भूमिका निभायेगी। युवा अपने सपनों को साकार करें, स्वयं आगे बढ़ें और समाज, देश तथा प्रदेश को आगे बढ़ायें।

मुझे संतोष है कि मध्यप्रदेश का युवा प्रदेश सरकार पर भरोसा करता है। इस मिशन से उनके जीवन में नया सूर्य उगे, उनका जीवन आलोकित हो और वे समाज के लिये रचनात्मक और सृजनात्मक कार्यों में सहभागी बनें।

युवाओं को जाग्रत करने और भारतीय आध्यात्म और संस्कृति को वैश्विक पटल पर स्थापित करने वाले स्वामी विवेकानंद जी को पुनश्च नमन।

(लेखक, मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री हैं)

कल से महाकुंभ

गले में सांप, मुंह से आग के गोले, महाकाल के रौद्र रूप में नजर आए महाकुंभ में निर्मल अखाड़े की पेशवाई

अद्भुत नजारे आने लगे हैं नजर

प्रयागराज (एजेंसी)। संगम की रेती पर कल 13 जनवरी से महाकुंभ शुरू हो रहा है। 11 जनवरी को निर्मल अखाड़े की पेशवाई निकाली गई है। रथ, बग्घी और घोड़ों पर सवार होकर साधु-संत कीडगंज स्थित अखाड़े से रवाना हुए। पीछे-पीछे महिलाएं गुरुबाणी का पाठ और शबद कीर्तन करते हुए महाकुंभ की तरफ बढ़ रही हैं। एक हजार से ज्यादा संत इसमें शामिल हैं।

आगे पंच प्यारे हाथों में तलवार लेकर बढ़ रहे

कीडगंज निर्मल अखाड़े की पेशवाई महाकुंभ के लिए रवाना हो चुकी है। यात्रा जॉनसेनगंज चौराहे पर पहुंची है। आगे आगे गुरु ग्रंथ साहिब की पालकी चल रही है, उसके आगे पंच प्यारे हाथों में तलवार लेकर महाकुंभ की तरफ बढ़ रहे हैं। सेवादार सैकड़ों की संख्या में आगे सड़क को धुल रहे हैं। झाड़ू लगा रहे हैं। शहर के लोग इन संतों का स्वागत कर रहे हैं। शहरवासी सभी संतों की आरती उतार रहे हैं। संत सभी को प्रसाद देते हुए बैंड बाजे के साथ पेशवाई में चल हैं।

ब्रह्म मुहूर्त में उठकर शिविर में करते हैं पूजा पाठ– सचिव महंत देवेंद्र सिंह शास्त्री ने बताया–इस अखाड़े को उदासीन अखाड़ा भी कहा जाता है। उदासीन का अर्थ ब्रह्म या समाधि की अवस्था से है। इस अखाड़े के संत पूरे महाकुंभ मेला के दौरान ब्रह्म मुहूर्त में उठ जाते हैं और पूजा पाठ, गुरुग्रंथ साहिब, गुरुबाणी का पाठ करते हैं।

अखाड़े में आएंगे देशभर के सिख साधु-संत

श्री निर्मल पंचायती अखाड़े के सचिव महंत देवेंद्र सिंह शास्त्री बताते हैं, पेशवाई में देशभर के सिख समुदाय के संत शामिल हो रहे हैं। ये अखाड़ा सेवा भाव, निर्मल आचरण और परोपकार को पहला आचरण मानता है। इस अखाड़े से हर व्यक्ति जुड़ सकता है, जिसके भीतर सेवा, त्याग और तपस्या की भावना आ चुकी है।

केजरीवाल ने अन्ना जैसे संत का इस्तेमाल किया: अमित शाह

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली में गृहमंत्री अमित शाह ने शनिवार को झुग्गी बस्ती प्रधान सम्मेलन में कहा कि दिल्ली के झुग्गीवासी झूठे वादे करने वाले अरविंद केजरीवाल को सबक सिखाने जा रहे हैं। 5 फरवरी दिल्ली का

आपदा से मुक्ति का दिन है। इस दिन दिल्ली को करप्शन से मुक्ति मिलेगी। आप सरकार ने दिल्ली को नरक बनाने का काम किया है। जिन लोगों ने भ्रष्टाचार के खिलाफ आंदोलन किया। अन्ना जैसे संत पुरुष को आगे करके सत्ता में आए, उन्होंने इतना भ्रष्टाचार किया कि सारे रिकॉर्ड टूट गए। दिल्ली सरकार 10 साल से डिजास्टर बनी हुई है। पूरा देश कहां से कहां पहुंच गया, लेकिन दिल्ली वाले वहीं रह गए।

रामलला की प्राण प्रतिष्ठा की पहली वर्षगांठ में शामिल हुए सीएम योगी, कहा-

कमजोर होंगे तो, अंजाम धर्मस्थल भुगतेंगे, बहन-बेटियां भुगतेंगी

अयोध्या (एजेंसी)। अयोध्या में रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा की पहली वर्षगांठ में सीएम योगी भी शामिल हुए। उन्होंने कहा- किन कारणों से हमारे पूज्य आराध्य देव स्थल अपमानित हो रहे थे। अगर हम जाति के नाम पर विभाजित रहेंगे तो इस तरह की अपमानजनक स्थितियों का सामना करना पड़ेगा। हम कमजोर होंगे तो इसका खामियाजा हमारे पूज्य धर्म स्थलों को भुगतना होगा। बहन-बेटियों को भुगतना होगा। सीएम योगी ने कहा- रामजन्मभूमि का आंदोलन, एक सार्थक लक्ष्य की ओर आगे बढ़ रहा है। अब अयोध्या में आने पर त्रेता युग का अहसास होता है। एक-दो साल में राम जन्मभूमि परिसर अपने भव्य रूप में होगा। ये आध्यात्म और धर्म के सबसे वैभवशाली धाम के रूप में विकसित हो रहा है।

माँ नर्मदा के जल से सिंचित होगी बड़वानी जिले की कृषि भूमि : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

सीएम ने सेंधवा में 2639 करोड़ के 13 विकास कार्यों का भूमिपूजन और 19 कार्यों का लोकार्पण

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि हर खेत को पानी और हर हाथ को रोजगार दिलाना हमारा संकल्प है। पारस के स्पर्श से लोहा जिस प्रकार सोना हो जाता है, उसी प्रकार धरती को पानी मिले तो वह सोना उगलती है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में प्रदेश में विभिन्न सिंचाई परियोजनाओं के माध्यम से हम इस संकल्प को पूरा करेंगे। हम हर गांव तक और हर खेत तक पानी पहुंचाएंगे। यह पानी अगर 60-70 वर्ष पहले खेतों को मिल जाता तो आज देश की दशा ही बदल जाती। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि माँ नर्मदा मध्यप्रदेश की जीवनदायिनी है और निमाड़ के लोगों को माँ नर्मदा का आँचल मिला है। नर्मदा घाटी की इंदिरा सागर परियोजना और लोअर गोई परियोजना की नहरों से बड़वानी जिले में सूक्ष्म सिंचाई पहले से हो रही है। अब सेंधवा और निवाली माइक्रो उद्वहन सिंचाई परियोजना से जिले के सुदूर क्षेत्रों में किसानों को अपने खेतों तक सिंचाई के लिये पर्याप्त मात्रा में माँ नर्मदा का जल उपलब्ध हो सकेगा।

वन ग्रामों को राजस्व ग्रामों में किया जायेगा परिवर्तित

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि टंट्या मामा, भीमा नायक जैसे जनजातीय नायकों ने देश के स्वाभिमान के लिए अंग्रेजों से संघर्ष किया। उनके नाम से अंग्रेज थर्राते थे। रेल उन्हें प्रणाम करके आगे बढ़ती थी। हम उनके बलिदान को याद करते हैं और उन्हें नमन करते हैं। हमारी सरकार ने कार्यभार ग्रहण करने के 3 महीने के अल्प समय में ही खरगोन में टंट्या मामा के नाम पर विश्वविद्यालय बनाया। जनजाति भाइयों के कल्याण के लिए टंट्या मामा योजना भी चलाई गई है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने जनजातीय क्षेत्र के समग्र विकास के लिए वन ग्रामों को राजस्व ग्रामों में परिवर्तित करने की घोषणा की।

हर पात्र व्यक्ति को मिलेगा पक्का मकान

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि यह बदलाव का दौर है। हम हर व्यक्ति के जीवन में बदलाव लाएंगे, जन कल्याण हमारा मकसद है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सरकार हर व्यक्ति को पक्का मकान दिलाने के लिए भी संकल्पित है। जो व्यक्ति छूट गए हैं उनका दोबारा सर्वेक्षण कराया जाएगा।

मौसेरे जीजा ने छिपाया था 52 किलो सोना-11 करोड़ कैश

सौरभ के रिश्तेदारों की प्रॉपर्टी होगी अटैच, जंगल में कार से किया था बरामद

भोपाल (नप्र)। भोपाल में आरटीओ के पूर्व कॉन्स्टेबल सौरभ शर्मा केस में आयकर विभाग अब उसके रिश्तेदारों की प्रॉपर्टी अटैच करने की तैयारी में है। जांच में सामने आया है कि मेंडोरी के जंगल में इनोवा कार में जो 52 किलो गोल्ड और 11 करोड़ कैश मिला था वह सौरभ का मौसेरा जीजा काफिले में लेकर गया था। जिस जगह गोल्ड और कैश से भरी इनोवा मिली वह प्रॉपर्टी भी सौरभ की मौसी सविता असवानी के बेटी के नाम पर है।

त्रिशूल कंस्ट्रक्शन कंपनी के मुखिया राजेश शर्मा से मिली डायरी की जांच शुरू

पिछले महीने भोपाल के रसूखदार बिल्डर राजेश शर्मा की कंपनी त्रिशूल कंस्ट्रक्शन और उससे जुड़े लोगों के खिलाफ आईटी ने बड़ी छापेमारी की थी। इस छापेमारी में कई करोड़ रुपए नगदी और बड़ी मात्रा में सोने चांदी की जेवरात भी मिले थे। जांच दौरान आईटी की टीम के हाथ एक डायरी भी हाथ लगी है। आईटी के सूत्रों ने बताया डायरी की छानबीन शुरू कर दी गई है, जिसमें पूर्व आईएएस अधिकारियों के अलावा वर्तमान में कार्यरत आई ए एस और आईपीएस अधिकारियों के नाम भी हैं। सूत्र ने बताया कि डायरी में यह नाम रिश्वत और निवेश दोनों रूप में दर्ज है। आईटी टीम डायरी की गहन छानबीन कर रही है। बताया जाता है कि डायरी में कुछ राजनेताओं के नाम भी सामने आने की संभावना है। उल्लेखनीय के आईटी टीम ने पिछले महीने राजेश शर्मा और उनसे जुड़े लोगों के खिलाफ 56 स्थान पर छापेमारी की थी। इनमें 53 भोपाल में दो इंदौर में और एक ग्वालियर में छापा डाला था।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 25 °c

न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ रविवार, 12 जनवरी 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

संदीप राशिनकर को कलारत्न सम्मान

इंदौर। इंडिया नेटबुक्स - बीपीए फाउंडेशन, दिल्ली द्वारा शहर के चित्रकार संदीप राशिनकर को 'कलारत्न ' पुरस्कार घोषित किया गया है।

इंडिया नेटबुक्स के डॉ. संजीव कुमार ने बताया कि यह सम्मान संस्था द्वारा दिल्ली में आयोजित साहित्यकार सम्मानोत्सव 2025 के अंतर्गत दिया जाएगा। यह सम्मान संदीप के कला नवाचार और वृहद कला अवदान के लिए दिया जा रहा है। ज्ञातव्य है कि संदीप न सिर्फ जीवन गौरव के साथ देश भर में अनेक सम्मानों से सम्मानित हो चुके है वरन उनके दीर्घ कला अवदान पर कला संकाय में पीएचडी भी हो रही है।

निजी नर्सिंग होम संचालक डॉक्टर दंपत्ति पर मामला दर्ज

छतरपुर। प्रेम रूपा नसिंग होम के डॉक्टर दम्पति सहित अन्य महिला डाक्टर और नर्स पर गैर इरादतन हत्या का मामला दर्ज किया। एक अन्य महिला डॉक्टर और नर्स पर हुआ गैर इरादतन हत्या का मामला दर्ज हुआ है। प्रसूता के परिजनो ने नसिंग होम पर लापरवाही से मौत होने के आरोप लगाए थे। प्रेम रूपा नर्सिंग होम के संचालक डॉक्टर दम्पति राजेश खरे और उनकी पत्नी प्रतिमा खरे और नर्स सहित एक अन्य महिला डॉ. रश्मि खरे पर मामला दर्ज हुआ। छह महीने पहले प्रसूता की डिलेवरी के दौरान हुई मौत का मामला था।

शिवसेना- बीटी का ऐलान

मुंबई-नागपुर महानगर पालिका चुनाव अकेले लड़ेंगे

मुंबई (एजेंसी)। इंडिया ब्लॉक में बढ़ती रार के बीच शिवसेना (बीटी) के राज्यसभा सांसद संजय राउत ने शनिवार को कहा कि पार्टी मुंबई और नागपुर

महानगरपालिका के चुनाव अकेले लड़ेगी। उन्होंने कहा, हम मुंबई और नागपुर महानगरपालिका अपने दम पर लड़ेंगे; जो भी होगा, हमें खुद देखना होगा। उद्धव ढाकरे ने हमें संकेत दिया है। मैंने अभी-अभी हमारे नागपुर शहर अध्यक्ष प्रमोद मनमोड़े से इस बारे में चर्चा की है। राउत ने कहा, यह फैसला लोकल लेवल पर पार्टी मजबूत करने के लिए लिया गया है। लोकसभा और विधानसभा चुनाव में कार्यकर्ताओं को मौका नहीं मिलता। इससे पार्टी की ग्रोथ प्रभावित हो रही है।

महाकुंभ में दान दी गई बच्ची का संन्यास वापस

प्रयागराज (एजेंसी)। प्रयागराज महाकुंभ में दीक्षा लेने वाली 13 साल की लड़की का संन्यास 6 दिन में ही वापस हो गया। दीक्षा दिलाने वाले महंत कौशल गिरि को जूना अखाड़े से 7 साल के लिए निष्कासित कर दिया गया। उन्होंने नाबालिग को गलत तरीके से शिष्य बनाया था।

श्रीपंचदशनाम जूना अखाड़ा के संरक्षक हरि गिरि महाराज ने कहा- यह अखाड़े की परंपरा नहीं रही है कि किसी नाबालिग को संन्यासी बना दें। इस मुद्दे पर बैठक कर सर्वसम्मति से फैसला लिया गया है।

बाबा साहब की पुण्यभूमि महू के लिए कांग्रेस और राहुल गांधी ने कोई कार्य नहीं किया : भाजपा प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा

राहुल गांधी महू पहुंचने से पहले बाबा साहब से किए गए अन्याय के लिए माफी मांगे

भोपाल। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व खजुराहो सांसद श्री विष्णुदत्त शर्मा ने भाजपा प्रदेश कार्यालय में पत्रकार-वार्ता को संबोधित करते हुए कहा कि कांग्रेस और नेहरू परिवार ने जिंदगी भर बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर का अपमान किया है। बाबा साहब की जन्मस्थली महू में कांग्रेस और राहुल गांधी ने कोई कार्य नहीं किया है। कांग्रेस पार्टी ने 'जय बापू, जय भीम, जय संविधान' रैली जनता को भ्रमित करने के लिए निकाल रही है। इस यात्रा में शामिल होने राहुल गांधी भी बाबा साहब की जन्मस्थली पुण्यभूमि महू आ रहे हैं। राहुल गांधी को महात्मा गांधी, बाबा साहब और संविधान से कांग्रेस व अपने द्वारा किए गए कृत्यों के लिए माफी मांगनी चाहिए, इसके बाद वे महू आएं। उन्होंने कहा कि कांग्रेस नेताओं ने आज दलित समाज को बेजुबान कहा है। हमारे दलित भाई-बहनों को बेजुबान कहकर कांग्रेस नेताओं ने उनका घोर अपमान किया है, इसके लिए उन्हें माफी मांगनी चाहिए। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी महात्मा गांधी ''बापू'' और बाबा साहब के विचारों को जमीन पर उतारने और जन-जन तक पहुंचाने का कार्य कर रहे हैं। भारतीय जनता पार्टी ने बाबा साहब के कार्यों को जन-जन तक पहुंचाने के लिए 11 से 25 जनवरी तक संविधान गौरव अभियान शुरू किया है। इस अभियान के तहत भाजपा बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर के विचारों और कार्यो को सम्मेलन, सभाएं व विशेष संपर्क कर जनता तक पहुंचाने का कार्य करेगी।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष व सांसद श्री विष्णुदत्त शर्मा ने कहा कि कांग्रेस पार्टी और उसके नेताओं ने अपने राजनैतिक स्वार्थ के लिए बाबा साहब की पुण्य भूमि महू का चयन किया है। महू बाबा साहब की जन्मस्थली है। देश में 55 साल से अधिक समय तक राज करने वाली कांग्रेस पार्टी ने बाबा साहब की जन्मस्थली व उनसे जुड़े अन्य स्थलों के लिए कोई कार्य नहीं किया। मध्यप्रदेश में भाजपा की सरकारों ने बाबा साहब की जन्मस्थली को स्मारक बनाकर तीर्थ स्थल के रूप में विकसित किया है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा सरकार ने बाबा साहब से जुड़े स्थलों को पंचतीर्थ बनाने का कार्य किया है। पंचतीर्थ में महू स्थित जन्म स्थली, लंदन में पढ़ाई के समय जहां रहते थे वह स्थान, दीक्षा भूमि, परिनिर्वाण स्थल शामिल हैं। उन्होंने कहा कि कांग्रेस की सोच हमेशा से डॉ. अंबेडकर विरोधी रही है। आज भी कांग्रेस पार्टी और राहुल गांधी डॉ. अंबेडकर विरोधी विचारधारा पर कार्य कर रहे हैं। राहुल गांधी ने अध्यादेश फाड़कर संविधान की धज्जियां उड़ाई थीं। राहुल गांधी को बाबा साहब, बापू और संविधान के अपमान के लिए देश की जनता से माफी मांगने ''क्षमा'' यात्रा निकालनी चाहिए।

व्यक्तिगत प्रगति के साथ समाज-कल्याण में भी युवा निभायें अपनी भूमिका: उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल

भोपाल। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि स्वामी विवेकानंद के विचार और उनका जीवन आज भी युवाओं के लिए आदर्श और प्रेरणा का स्रोत है। उनका यह ऐतिहासिक कथन कि '21वीं सदी भारत की होगी,' आज के समय में प्रासंगिक है।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत 2047 तक विश्वगुरु बनने की राह पर अग्रसर है। इस सपने को साकार करने में युवा शक्ति की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। उन्होंने युवाओं से अपील की कि वे अपनी क्षमताओं और ऊर्जा का उपयोग केवल व्यक्तिगत प्रगति के लिए ही नहीं, बल्कि समाज, राज्य और देश के कल्याण के लिए करें। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने स्वामी विवेकानंद जयंती और राष्ट्रीय युवा दिवस की प्रदेश और देश के युवाओं को शुभकामना दी है।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि वर्तमान समय युवाओं के लिए अनगिनत अवसरों से भरा है। शिक्षा, कौशल विकास और नवाचार के क्षेत्र में काम करते हुए युवा भारत को नई ऊँचाइयों पर ले जा सकते हैं। उन्होंने कहा कि युवा शक्ति का सही दिशा में उपयोग ही भारत को आत्मनिर्भर और सशक्त राष्ट्र बनाएगा। स्वामी विवेकानंद के विचार न केवल युवाओं को सशक्त बनाते हैं, बल्कि हमें समाज और देश के प्रति हमारी जिम्मेदारियों का भी एहसास कराते हैं। उन्होंने युवाओं को यह संदेश दिया कि वे केवल अपने सपनों को पूरा करने तक सीमित न रहें, बल्कि समाज के वंचित और जरूरतमंद वर्गों की सहायता के लिए भी अपनी भूमिका निभाएँ।

मध्यप्रदेश युवा कांग्रेस प्रदेश कार्यकारिणी की अहम बैठक संपन्न

भोपाल। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के महासचिव मप्र प्रभारी श्री जितेन्द्र और प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष श्री जीतू पटवारी के मुख्य आतिथ्य और युवा कांग्रेस के अध्यक्ष मितेन्द्र दर्शन सिंह यादव की अध्यक्षता में आज मध्य प्रदेश युवा कांग्रेस की प्रदेश कार्यकारिणी की महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। बैठक में मप्र विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंगार, पूर्व मंत्री, विधायक और मप्र युवा कांग्रेस के प्रभारी जयवर्धन सिंह विशेष तौर पर उपस्थित रहे।

मप्र प्रभारी जितेन्द्र सिंह ने युवा कांग्रेस की बैठक को संबोधित करते हुये कहा कि युवा कांग्रेस संगठन का महत्वपूर्ण अंग है, युवा ही है जो पार्टी कार्यक्रमों में अहम और सशक्त भूमिका निभाकर देश के नवनिर्माण में अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर देश को प्रगति की ओर अग्रसर करने में महती भूमिका का दायित्व निभाते है।

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी ने कहा कि युवा कांग्रेस पदाधिकारियों को संबोधित करते हुए कहां की युवा कांग्रेस कार्यक्रमों में एक अहम भूमिका निभाने का काम करती है उसी क्रम में 27 जनवरी को राहुल गांधी जी की महू में संविधान बचाओ यात्रा में युवा कांग्रेस एक अहम भूमिका निभाने का काम करेगी आगे जीतू पटवारी ने युवा कांग्रेस मे महिलाओं की हिस्सेदारी को लेकर कहा की आने वाली युवा कांग्रेस की नई कार्यकारिणी में महिलाओं का एक कोटा निर्धारित किया जाए और ज्यादा से ज्यादा महिलाओं को पदाधिकारी बनने की रणनीति के साथ काम करें।

पॉपुलर एक्टर टीकू तलसानिया को आया मेजर हार्ट अटैक

मुंबई (एजेंसी)। बॉलीवुड और गुजराती सिनेमा के मशहूर कॉमेडी एक्टर टीकू तलसानिया को शनिवार सुबह हार्ट अटैक आया है। मेजर अटैक आने के

बाद उनकी कंडीशन क्रिटिकल है। एक्टर फिलहाल अस्पताल में भर्ती हैं। मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो 70 साल के टीकू तलसानिया की तबीयत बिगड़ने पर उन्हें मुंबई के प्राइवेट अस्पताल में भर्ती किया गया था। जांच में सामने आया है कि उन्हें मेजर हार्ट अटैक आया है। हालत क्रिटिकल होने पर उन्हें डॉक्टर्स के ऑब्जर्वेशन में रखा गया है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने आष्टा में हुई सड़क दुर्घटना पर दुख व्यक्त किया

मृतकों के परिवार को 2 लाख रुपए आर्थिक सहायता देने के निर्देश

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने सीहोर जिले के आष्टा में हुई एक सड़क दुर्घटना में ट्रैक्टर ट्रॉली में सवार दो यात्रियों की असामयिक मृत्यु और कई यात्रियों के गंभीर रूप से घायल हो जाने पर दुःख व्यक्त किया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बाबा महाकाल से मृतकों की आत्मा की शांति और घायलों के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की प्रार्थना की है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि दुःख की इस घड़ी में हम सभी शोकाकुल परिवार के साथ हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने राज्य शासन की ओर से मृतकों के परिवार को 2 लाख रुपए की आर्थिक सहायता मंजूर की है। उन्होंने जिला प्रशासन सीहोर को सभी घायलों के समुचित उपचार की व्यवस्था करने के निर्देश दिए हैं।

भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष व सांसद विष्णुदत्त शर्मा एवं प्रदेश संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी ने अटल पथ स्थित श्री राम मंदिर और न्यू मार्केट के हनुमान मंदिर में पूजन-अर्चना कर प्रदेशवासियों की सुख-समृद्धि की कामना की।

कोरोना वायरस जैसे

एचएमपीवी के देश में 16 केस

असम में 10 महीने का बच्चा पॉजीटिव, गुजरात में सबसे ज्यादा 5, महाराष्ट्र में 3 मामले

नई दिल्ली (एजेंसी)। कोरोना वायरस जैसे ह्यूमन मेटान्यूमोवायरस (एचएमपीवी) के देश में कुल 16 मामले हो गए हैं। शनिवार को असम में पहला केस सामने आया। यहां 10 महीने का बच्चा पॉजीटिव है।

बच्चे का डिब्रूगढ़ में असम मेडिकल कॉलेज और अस्पताल (एएमसीएच) में इलाज चल रहा है। उसकी हालत स्थिर है। डॉ. ध्रूबज्योति भुइयां ने बताया कि बच्चे को चार दिन पहले सर्दी-जुकाम के लक्षणों के चलते सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया गया था।

देश में एचएमपीवी के सबसे ज्यादा 5 मामले गुजरात में हैं। महाराष्ट्र में 3, कर्नाटक और तमिलनाडु में 2-2, यूपी, राजस्थान, असम और बंगाल में एक-एक केस सामने आया है।

एचएमपीवी केस बढ़ने पर अब राज्यों ने भी सतर्कता बढ़ा दी है। पंजाब में बुजुर्गों और बच्चों को मास्क पहनने की सलाह दी गई है। इधर गुजरात में अस्पतालों में आइसोलेशन वार्ड बनाए जा रहे हैं। हरियाणा में भी स्वास्थ्य विभाग को एचएमपीवी केसेस पर निगरानी रखने के आदेश दिए गए हैं।

कैग रिपोर्ट में चौंकाने वाला खुलासा

नई शराब नीति से दिल्ली सरकार के खजाने को 2026 करोड़ का नुकसान

नई दिल्ली (एजेंसी)। भाजपा नेता अनुराग ठाकुर ने शनिवार को दिल्ली में प्रेस कांफ्रेंस करके बताया कि आप सरकार की शराब नीति से सरकार को 2026 करोड़ का नुकसान हुआ। विधानसभा चुनाव से 25 दिन पहले दिल्ली में शराब नीति को लेकर कैग (कंप्ट्रोलर एंड ऑडिटर जनरल ऑफ इंडिया) की रिपोर्ट लीक हुई है। इसमें सरकार को 2026 करोड़ रुपए का रेवेन्यू लॉस होने की बात कही गई है। मीडिया सूत्रों ने दावा किया है कि रिपोर्ट की कॉपी उसके पास है। रिपोर्ट में बताया गया है कि शराब नीति में काफी गड़बड़ियां थीं, जिनमें लाइसेंस देने में खामी भी शामिल है। इसके साथ ही आप लीडर्स को कथित तौर पर घूस के जरिए फायदा पहुंचाया गया। रिपोर्ट में बताया गया है कि डिप्टी चीफ मिनिस्टर जिस ग्रुप ऑफ मिनिस्टर्स की अगुआई कर रहे थे, उसने एक्सपर्ट पैनल के सुझावों को खारिज कर दिया था। कैबिनेट ने नीति को मंजूरी दे दी थी और कई अहम फैसलों पर तब के उप-राज्यपाल की मंजूरी भी नहीं ली गई थी।

स्वामी विवेकानंद का जीवन सदैव प्रेरणास्पद रहेगा : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

विवेकानंद जयंती की पूर्व संध्या पर मुख्यमंत्री ने किया प्रतिमा लोकार्पण

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने शनिवार को इंदौर में ग्राम कलारिया में विवेकानंद जयंती की पूर्व संध्या पर स्वामी विवेकानंद की आदमकद प्रतिमा का लोकार्पण किया। उन्होंने कहा कि स्वामी विवेकानंद का जीवन सदैव प्रेरणादायी रहेगा। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी, स्वामी विवेकानंद के विचारों और भविष्यवाणी को चरितार्थ कर रहे हैं। स्वामी विवेकानन्द ने उस समय कहा था कि आने वाली सदी भारत की होगी। प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में आज विश्व में देश का मान बढ़ रहा है। कार्यक्रम में जल संसाधन मंत्री श्री तुलसीराम सिलावट, राज्यसभा सांसद सुश्री कविता पाटीदार, क्षेत्रीय विधायक श्री मधु वर्मा, विधायक श्री गोलू शुक्ला, श्री रमेश मेंदोला सहित अन्य जनप्रतिनिधि उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने स्वामी विवेकानंद के विभिन्न जीवन प्रसंगों का विस्तार से उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि स्वामी विवेकानंद ने समूचे भारत का देशाटन किया। सनातन धर्म के मर्म को समझा।

उन्होंने अपनी विद्वता और प्रतिभा से देश की महान सनातन संस्कृति और हिंदू धर्म की महानता को विश्व में

प्रतिष्ठित किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मानव सेवा ही देव सेवा है। उन्होंनें नागरिकों से आह्वान किया कि सेवा भाव को जाग्रत करें। राष्ट्र की प्रगति के लिए प्रत्येक नागरिक अपना योगदान दें। उन्होंने कहा कि दिखावे की शादियों से बड़े लोग परहेज़ करें तो यह समाज में अन्य लोगों के लिए भी एक उदाहरण होगा। क्षेत्रीय विधायक श्री मधु वर्मा ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव विकास कार्यों की स्वीकृति के लिए सदैव उदार रहे हैं। राऊ विधानसभा क्षेत्र के अनेक विकास कार्यों के लिये उन्होंने स्वीकृति प्रदान की है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव राष्ट्रीय युवा दिवस पर करेंगे 'स्वामी विवेकानंद युवा शक्ति मिशन' का शुभारंभ

1.27 करोड़ लाड़ली बहनों के खाते में 1553 करोड़ की राशि होगी अंतरित

भोपाल (नप्र) ।प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विजन को मिशन के रूप में साकार करने मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में मध्यप्रदेश सरकार प्रतिबद्ध है। प्रधानमंत्री श्री मोदी का ध्येय मंत्र GYAN (ग़रीब, युवा, अन्नदाता और नारी) पर ध्यान है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ज्ञान से ध्यान के मंत्र के चार स्तंभों में से एक 'युवा' के सशक्तिकरण पर केन्द्रित 'स्वामी विवेकानंद युवा शक्ति मिशन' का शुभारंभ राष्ट्रीय युवा दिवस 12 जनवरी को स्वामी विवेकानंद की 162वीं जयंती पर रवीन्द्र भवन सभागृह में प्रात: 11:30 बजे करेंगे।

मुख्यमंत्री ने बताया कि मध्यप्रदेश के विकास में युवाओं की व्यापक क्षमताओं का उपयोग करने के उद्देश्य से तैयार किये गए इस मिशन का नामकरण युवाओं के आदर्श स्वामी विवेकानंद के नाम पर किया गया है। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार युवाओं के कल्याण में कोई कसर नहीं छोड़ रही है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि युवाओं को नौकरी दिए जाने की श्रृंखला में तीन वर्ष के रिक्त पद पीएससी के माध्यम से एक ही वर्ष में भरे जाएंगे, हालांकि इनके लिए परीक्षाएं अलग-अलग होंगी। उन्होंने घोषणा की है कि जल्द ही बैकलॉग के खाली पदों के लिए भी भर्ती की जाएगी। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव स्वामी विवेकानंद जयंती पर प्रदेश की एक करोड़ 27 लाख लाड़ली बहनों के खाते में 1553 करोड़ रूपये, 55 लाख सामाजिक सुरक्षा पेंशन के हितग्राहियों के खाते में 335 करोड़ रूपये और 27 लाख बहनों के खाते में गैस रीफिलिंग के 27 करोड़ रूपये से अधिक की राशि अंतरित करेंगे।

नर्मदा परिक्रमा पथ किया जायेगा विकसित : मुख्यमंत्री

● मुख्यमंत्री ने इंदौर में अष्टधातु से निर्मित माँ नर्मदा की अलौकिक प्रतिमा का किया अनावरण

भोपाल(नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि पुण्य सलिला माँ नर्मदा का मध्यप्रदेश को विशेष आशीर्वाद है। उन्होंने कहा कि मां नर्मदा के परिक्रमा पथ का श्रद्धालुओं की सुविधा को दृष्टिगत रखते हुए विकास किया जाएगा। इसके लिए मंत्रि-मंडलीय उप समिति का गठन किया गया है। परिक्रमा पथ के विकास के लिए सभी संबंधित विभागों के समन्वित प्रयासों से विशेष कार्य योजना तैयार कर विकास कार्य कराये जाएंगे। परिक्रमा पथ पर श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए घाटों के विकास, वृक्षारोपण, आवास निर्माण, अन्न क्षेत्र निर्माण आदि कार्य किये जाएंगे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव शनिवार को इंदौर में अष्टधातु से निर्मित माँ नर्मदा की अलौकिक प्रतिमा के अनावरण समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने इंदौर नगर निगम द्वारा विकसित माँ नर्मदा चौराहे के सौंदर्यीकरण एवं विकास कार्यों का लोकार्पण भी किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने शंख ध्वनि और मां नर्मदा के जयकारों के बीच मां नर्मदा की प्रतिमा का अनावरण किया। इस अवसर पर नर्मदा अष्टक का गान भी हुआ। जल संसाधन मंत्री श्री तुलसीराम सिलावट, महापौर श्री पुष्यमित्र भार्गव, राज्यसभा सांसद सुश्री कविता पाटीदार, विधायक श्री महेंद्र हार्डिया, सुश्री ऊषा ठाकुर, श्री गोलू शुक्ला, श्री रमेश मेंदोला, श्री मधु वर्मा सहित अन्य जनप्रतिनिधि मौजूद थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि माँ नर्मदा आध्यात्मिक रूप से विशेष महत्व रखती है। यह एकमात्र ऐसी नदी है जिसकी श्रद्धालुओं द्वारा पूरी परिक्रमा की जाती है। इसके तट तपोभूमि और साधना स्थली है।

कन्नौज स्टेशन पर निर्माणाधीन वेटिंग हॉल गिरा, 40 लोग दबे

23 मजदूरों को निकाला, 13 करोड़ की लागत से बन रहा था

कन्नौज (एजेंसी)। कन्नौज रेलवे स्टेशन पर शनिवार को बड़ा हादसा हो गया। यहां दो मंजिला निर्माणाधीन स्टेशन का लिंटर अचानक ढह गया। मलबे में 40 से ज्यादा मजदूर दब गए। अब तक 23 घायल जिला अस्पताल पहुंचाए गए हैं। इनमें से 7 को राजकीय मेडिकल कॉलेज तिर्वा रेफर किया गया है। हादसे के बाद रेस्क्यू ऑपरेशन चल रहा है। घायलों को ई-रिक्शे और एंबुलेंस से अस्पताल ले जाया गया।

पुरानी बिल्डिंग से सटा कर नई बिल्डिंग का निर्माण कराया जा रहा- कन्नौज रेलवे स्टेशन की पुरानी बिल्डिंग से सटा कर नई बिल्डिंग का निर्माण कराया जा रहा है। दरअसल, 13 करोड़ की लागत से स्टेशन के वेटिंग एरिया का हाल बनाया जा रहा है। इसके लिए 1 साल से काम चल रह है। इसका काम आशुतोष इंटरप्राइजेज को दिया गया था। ठेकेदार राम विलास राय काम करवा रहे थे।

परिक्रमा

सर्जरी करते समय राहुल के हाथ कांपेंगे तो नहीं

अरुण पटेल

लोकसभा में प्रतिपक्ष के नेता राहुल गांधी वास्तव में कांग्रेस में अपने द्वारा उठाये गये मुद्दों के प्रति प्रतिबद्ध नेताओं व कार्यकर्ताओं की जमात खड़ी करने के लिए कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे के माध्यम से जो सर्जरी करना चाहते हैं उसमें देखने वाली बात यही होगी कि क्या ऐसा करते समय राहुल गांधी एक कुशल सर्जन की तरह सर्जरी कर पाते हैं या उनके हाथ अपनों के चेहरे देखकर कापेंगें तो नहीं। राहुल गांधी को कांग्रेस संगठन को चुस्त-दुरुस्त करने और मैदान में संघर्ष करने के अनुरुप ढालना है तो उन्हें एक कुशल सर्जन की भूमिका का निर्वहन करना होगा ताकि वे जो चाहते हैं उस प्रकार से कांग्रेस में वैचारिक बदलाव भी आए और उस बदलाव के प्रति प्रतिबद्ध नेताओं व कार्यकर्ताओं की एक बड़ी फौज खड़ी हो सके। चूंकि इस समय संविधान की बात बहुत जोर-शोर से हो रही है और संविधान बचाओ के नारे पर ही लोकसभा में एक मजबूत प्रतिपक्ष खड़ा है। इसलिए राहुल को पूरी मुस्तैदी से अपनी दूसरी पदयात्रा में आगे बढ़ना होगा।

संविधान बचाओ के नारे पर जो सफलता कांग्रेस और उसके सहयोगी दलों को मिली उसी आधारभूमि को मजबूत करते हुए साल भर चलने वाली जो संविधान बचाओ पदयात्रा 27 जनवरी 2025 से राहुल करने वाले हैं उसके लिए महू से अधिक कोई दूसरी स्थली हो नहीं सकती थी क्योंकि महू डॉ. भीमराव आम्बेडकर की जन्मस्थली है और उन्होंने ही संविधान जिस रुप में सामने आया है उसे गढ़ने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया था। इन दिनों राजनीतिक फलक पर डॉ. आम्बेडकर के अपमान का मामला गर्माया हुआ है और दलित संघों की जो प्रतिक्रियाएं सामने आई हैं उसको देखते हुए कांग्रेस को भी आगे आना ही पड़ा क्योंकि उसने ही इस मुद्दे की शुरुआत की थी। अब कांग्रेस 27 जनवरी को बाबा साहेब डॉ. भीमराव आम्बेडकर की जन्मस्थली से जिस पदयात्रा का आगाज करने जा रही है उसकी थीम है ''जय बापू, जय भीम, जय संविधान''। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के निर्देश पर मध्यप्रदेश कांग्रेस कमेटी ने भी अपनी तैयारियां पूरी तेजी से प्रारंभ कर दी हैं और इसके लिए अपने विभिन्न पदाधिकारियों की जिम्मेदारी भी सुनिश्चित कर दी है। इस यात्रा में कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी, सांसद प्रियंका गांधी वाड्रा सहित वरिष्ठ कांग्रेस नेता भी भाग लेंगे। साल भर

चलने वाली इस पदयात्रा का आगाज भी महू हो ही होगा। उल्लेखनीय है कि केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह के संसद में संविधान पर चर्चा के दौरान भाषण के एक अंश को लेकर यह विवाद शुरु हुआ था। कांग्रेस व अन्य विपक्षी दलों ने अमित शाह के बयान को आम्बेडकर के सम्मान से जोड़ दिया था। इसे मुद्दा बनाकर संसद में सरकार की घेराबंदी करने की कोशिश की गई और अब इस मुद्दे को गांव-गांव तक ले जाने की तैयारी है। इसी के लिए ''जय बापू, जय भीम, जय संविधान'' अभियान के अंतर्गत महू में रैली आयोजित की जायेगी ताकि इसका संदेश पूरे देश में दिया जा सके। प्रदेश कांग्रेस कमेटी कार्यालय में हुई एक बैठक में प्रदेश प्रभारी महासचिव जितेन्द्र सिंह व प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी ने कहा कि कांग्रेस के सभी वरिष्ठ नेता महू आयेंगे और कार्यक्रम की तैयारी भी उसी हिसाब से करना है। कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए ब्लाक, जिला और प्रदेश पदाधिकारियों के साथ विधायकों को भी जुटना होगा। इसके लिए 15 जनवरी से 21 जनवरी तक जिलों में जाकर जनसंपर्क अभियान चलाया जायेगा तथा प्रत्येक पदाधिकारी दस-दस घरों में संपर्क कर भाजपा की वास्तविकता और कांग्रेस जो कार्यक्रम कर रही है उसके बारे में कांग्रेस का जो नजरिया है उसको बतायेंगे। इस बैठक में कमलनाथ वर्चुअली शामिल हुए थे तथा इसमें दिग्विजय सिंह, अरुण यादव, कांतिलाल भूरिया, अजय सिंह, उमंग सिंघार व हेमंत कटारे सहित सभी वरिष्ठ पदाधिकारी शामिल थे।

दिग्विजय सिंह का मानना है कि कार्यकर्ताओं को आंदोलन में न उलझाया जाए बल्कि केवल संगठन पर ध्यान दिया जाये। जबकि उनके इस सुझाव पर प्रदेश प्रभारी जितेन्द्र सिंह ने असहमति जताते हुए कहा कि आवश्यकता अनुसार भी आंदोलन किए जायेंगे और ब्लाक से लेकर जिला इकाइयों तक एक माह में परिवर्तन होंगे तथा सभी पदाधिकारियों के काम का मूल्यांकन भी होगा। दिग्विजय सिंह ने राजनीति के पांच सूत्र रेखांकित करते हुए बताया कि वाक्य संपर्क, संवाद, स्वभाव, समावेश और सम्मान, इन सभी को ध्यान में रखना चाहिये। कांग्रेस के प्रदेश कांग्रेस उपाध्यक्ष राजीव सिंह को चुनाव व्यवस्था का प्रभारी बनाया गया है जबकि पूर्व मंत्री पी.सी. शर्मा सरकारी कर्मचारियों के संगठन से समन्वय की भूमिका निभायेंगे। के.के. मिश्रा को प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष का मीडिया सलाहकार बनाया गया है जबकि जे.पी. धनोपिया इलेक्शन कमीशन और लीगल वर्क का काम देखेंगे। आनंद राय को सोसायटी आउट रीच का काम दिया गया है इसके लिए अलग से डिपार्टमेंट बनाया जा रहा है। इस प्रकार कुल 35 इंचार्ज बनाये गये हैं। पूर्व विधायक प्रियव्रत सिंह को उपाध्यक्ष संगठन और पीसीसी के प्रशासन प्रभारी संजय कामले को संगठन का प्रभारी नियुक्त किया गया है। विधायक जयवर्धन सिंह को युवा कांग्रेस का प्रभारी बनाया गया है। किसी भी संगठन में युवा ही महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करते हैं इस प्रकार जयवर्धन सिंह को एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिली है। पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ के समर्थकों को भी जिम्मेदारियां सौंपी गयीं हैं। महेंद्र जोशी को प्रशिक्षण विभाग का प्रभारी बनाया गया है। फूलसिंह बरैया सामाजिक समन्वय का विभाग संभालेंगे।

और यह भी

नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने केन्द्र व राज्य की भाजपा सरकारों की घेराबंदी करते हुए आरोप लगाया है कि सरकार अमीरों पर कम और गरीबों पर टैक्स का ज्यादा बोझ डाल रही है। उन्होंने राज्य की भाजपा सरकार पर निशान साधते हुए यह भी कहा है कि पेट्रोल पर सबसे ज्यादा 29 प्रतिशत टेक्स मध्यप्रदेश में वसूल रही है जबकि यह आम जनता से जुड़ा हुआ सीधा मुद्दा है और राज्य सरकार चाहे तो इसको कम करके जनता को राहत दे सकती है, लेकिन ऐसा नहीं किया जा रहा है। अमीरों पर कम और गरीबों पर टैक्स का ज्यादा बोझ पड़ रहा है।

पीसीसी चीफ पटवारी बोले- नाक रगड़कर माफी मांगें शाह

महू रैली को लेकर कहा-संविधान गौरव दिवस के बजाय पश्चाताप यात्रा निकाले भाजपा

भोपाल (नप्र)। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी ने कहा है कि बीजेपी को संविधान गौरव दिवस मनाने की बजाय पश्चाताप यात्रा निकालनी चाहिए। बाबा साहब अंबेडकर की प्रतिमा पर नाक रगड़कर माफी मांगनी चाहिए। बीजेपी और आरएसएस ने कई बार संविधान बदलने की बात कही और इसकी कोशिश भी की है। इसलिए गौरव दिवस के बजाय पश्चाताप दिवस मनाना चाहिए। पटवारी ने कहा कि केंद्रीय मंत्री अमित शाह ने बाबा साहब का अपमान किया है तो उन्हें माफी मांगनी चाहिए। पटवारी ने अपने निवास पर मीडिया से चर्चा में कहा कि देश के सभी संतों ने एक ही बात कही है कि देश मोहब्बत का है। यही काम कांग्रेस पार्टी कर रही है। जनता ने कांग्रेस को विपक्ष का जनादेश दिया है। हम विपक्ष की भूमिका निभा रहे हैं। शिवराज सिंह चौहान ने जो वादे किए उन्हें सीएम मोहन यादव पूरे नहीं कर रहे।

25 जनवरी तक महू यात्रा की तैयारी करेंगे कांग्रेस जन- पटवारी ने कहा कि 17 जनवरी तक ब्लाक, 20 जनवरी तक मंडल की मीटिंग होगी और 25 जनवरी तक संविधान से प्यार करने वाले सभी लोग इसके

लिए जुटने की तैयारी करेंगे। एक लाख से अधिक लोग 27 जनवरी को महू में संविधान बचाने के लिए जुटेंगे। इसके लिए जिला और संभाग के प्रभारी नियुक्त किए गए हैं और वे सभी इसकी जिम्मेदारी निभाएंगे। पटवारी ने कहा कि नरेंद्र मोदी की सरकार के दौरान चुनाव आयोग को तोते का नाम दिया गया है। विधायक और सांसद जैसे पवित्र पदों को बेचने खरीदने का काम किया गया है। ऐसे में राहुल गांधी ने संविधान को बचाने के लिए लड़ाई शुरू की है। आरएसएस और बीजेपी ने समय-समय पर आरक्षण पर सवाल उठाए और चुनौती खड़ी की है। पटवारी ने कहा कि केंद्रीय मंत्री अमित शाह ने सोची समझी साजिश के अंतर्गत अंबेडकर.वाली बात कही थी।

केंद्रीय मंत्री का इस्तीफा होने तक चलती रहेगी कांग्रेस की लड़ाई

कांग्रेस के प्रदेश प्रभारी भंवर जितेंद्र सिंह ने कहा कि कांग्रेस ने देश के गरीब, मजदूर, एससी-एसटी की लड़ाई लड़ने और उनके विकास का काम किया है। बीजेपी देश को तोड़ने के लिए जाति, धर्म के नाम पर बीज बो रही है। उन्होंने कहा कि संविधान की रक्षा की यह लड़ाई तब तक चलती रहेगी जब तक कि केंद्रीय मंत्री अमित शाह इस्तीफा नहीं दे देते हैं। विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने कहा कि 27 जनवरी को महू में एक विशाल रैली निकाली जाएगी। सबका सम्मान, सबके अधिकार, सबकी अभिव्यक्ति ही कांग्रेस की राय है।

फ्रिज में लाश छिपाकर झूठ बोलता रहा लिव-इन-पार्टनर

देवास में लोग पूछते तो कहता- मां को अटैक आया, इसलिए मायके गई पत्नी

देवास (नप्र)। देवास की वृंदावन धाम कॉलोनी के एक मकान में शुक्रवार को प्रतिभा प्रजापति नाम की महिला का शव मिला था। पुलिस ने आरोपी को उज्जैन से गिरफ्तार कर लिया है। महिला के लिव इन पार्टनर संजय पाटीदार ने दोस्त के साथ मिलकर उसे गला दबाकर हत्या की थी। जांच में सामने आया कि बिजली बिल नहीं आए इसलिए मकान में रहने आए नए किराएदार ने फ्रिज बंद कर दिया था। इसी वजह से शव की बदबू आने लगी। फ्रिज खोलने पर उसमें शव होने की जानकारी सामने आई।

जानकारी के अनुसार, प्रतिभा का एक भाई और माता-पिता हैं, जो उज्जैन के फ्रीगंज में रहते हैं। लव मैरिज के बाद से ही परिजनों ने उससे रिश्ता तोड़ दिया था। शव मिलने की सूचना के बाद उन्होंने उसे ले जाने से इनकार कर दिया। हालांकि कुछ रिश्तेदारों ने देवास में ही अंतिम संस्कार करने की बात कही है।

जून 2024 में संजय ने मकान खाली दिया था- बीएनपी थाना प्रभारी अमित सोलंकी ने बताया कि मकान मालिक धीरेंद्र श्रीवास्तव ने जुलाई 2023 में यह मकान संजय पाटीदार को किराए पर दिया था। संजय ने जून 2024 में मकान खाली कर दिया, लेकिन एक कमरे में अपना कुछ सामान छोड़ दिया था, जिसमें वह फ्रिज भी शामिल था। मकान खाली करने से पहले संजय ने उस फ्रिज को अच्छी तरह से कवर किया था। पहले उस पर सफेद रंग का कपड़ा बांधा गया। इसके बाद उसके आसपास घर के सामान जैसे बर्तन स्टैंड और बिस्तर रख दिए थे। ताकि किसी को शक न हो। इसी बीच मकान मालिक के कहने पर नए किराएदार ने सफाई के लिए कमरा खोला था।

बार-बार कहता था, मैं सामान ले जाऊंगा- वर्तमान किराएदार बलवीर सिंह ने बताया कि हम जुलाई से यहां पर रहने आए थे। सामने के दो रूम पुराने किराएदार ने खाली नहीं किए थे। मैंने कई बार उन्हें फोन किया, लेकिन वह यही बोलते कि मैं सामान ले जाऊंगा। जब मकान मालिक से बात हुई तो हमने कहा था कि बच्चों की पढ़ाई के लिए हमें कमरा चाहिए, जिसे हम इस्तेमाल कर लेंगे।

मकान मालिक की सहमति से बुधवार रात 8.30 बजे कमरा खोला। उस समय फ्रिज चलता दिखा, उन्होंने सोचा बेवजह बिजली कर बिल आएगा, इसके बाद उन्होंने स्विच बंद कर दिया। इसके बाद शुक्रवार सुबह परिवार के साथ रूम की सफाई करने पहुंचे तो देखा फ्रिज से खून निकल रहा था और बदबू भी आ रही थी।

पत्नी की मौत से डिप्रेशन में आए युवक का सुसाइड

- घटना के समय घर में अकेला था, वृद्ध मां ने सबसे पहले देखा शव

भोपाल (नप्र)। भोपाल के हनुमानगंज इलाके में रहने वाले एक पेंटिंग ठेकेदार ने फांसी लगाकर सुसाइड कर लिया। घटना शुक्रवार रात की है। आत्महत्या से पहले वह घर में अकेले थे। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पीएम के लिए रवाना किया। शनिवार को पोस्टमार्ट्म के बाद बॉडी परिजनों को सौंप दी गई। सुसाइड नोट नहीं मिलने से आत्महत्या के सही कारणों का खुलासा नहीं हो सका है।

हालांकि परिजनों ने पुलिस पूछताछ में पत्नी की मौत के बाद से डिप्रेशन में होने की बात बताई है। वसीम खान (40) पुत्र अब्दुल रशीद खान, सलीम चौक काजीकैंप के रहने वाले थे। वह पेंटिंग ठेकेदारी करते थे। शुक्रवार की रात को घर में अकेले थे। इसी बीच उन्होंने अपने बेडरूम में रस्सी का फंदा बनाकर खिड़की की ग्रिल के सहारे फांसी लगा ली।

पत्नी की मौत के बाद से डिप्रेशन में थे- मृतक के साले वसीम अहमद ने बताया कि बहन की मौत के बाद से जीजा डिप्रेशन में रहने लगे थे। उनकी दो बेटियों की शादी हो चुकी है। जबकि छोटी बेटी हमारे साथ रहती है। घटना के समय जीजा वसीम की मां पड़ोस में गई थीं। बेटा काम पर गया हुआ था। रात करीब 9:30 बजे मां ने लौटकर देखा तो जीजा फंदे पर लटके दिखाई दिए।

पड़ोसियों की मदद से फंदे से उतारा- मृतक की मां ने शोर मचाकर पड़ोसियों को मदद के लिए बुलाया। पड़ोसियों की मदद से शव को फंदे से उतारा। हालांकि तक तक उनकी मौत हो चुकी थी। पिछले कई दिनों से वसीम ने काम भी छोड़ रखा था।

ज्ञानवान होने के साथ उसे आचरण में उतारना जरूरी : राज्यपाल श्री पटेल

विद्यार्थी भावी जीवन में सदैव वंचितों के प्रति संवेदनशील रहें

राज्यपाल हिन्दी विश्वविद्यालय के पांचवें दीक्षांत समारोह में हुए शामिल

भोपाल (नप्र)। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने कहा है कि ज्ञानवान होना ही पर्याप्त नहीं है, ज्ञान को आचरण में उतारना भी जरूरी है। भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी जैसे महान कवि, लेखक और राष्ट्रभक्त की स्मृति में स्थापित विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं का दायित्व है कि वह देश, समाज, समुदाय,परिवार और वंचितों के प्रति संवेदनशील रहें। राज्यपाल श्री पटेल शनिवार को कुशाभाऊ ठाकरे अंतर्राष्ट्रीय कन्वेंशन सेंटर हॉल में आयोजित अटल बिहारी वाजपेयी हिन्दी विश्वविद्यालय के पांचवें दीक्षांत समारोह में उपस्थित अतिथियों और विद्यार्थियों को संबोधित कर रहे थे।

राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि भावी जीवन में कैरियर की सफलताओं में माता-पिता, गुरूजन और समाज के जरूरतमंद पीछे नहीं छूटने चाहिए। पालकों के संघर्ष के पलों, समाज के सबसे पिछड़े, गरीब व्यक्ति के आपकी शिक्षा-दीक्षा में प्रत्यक्ष और परोक्ष सहयोग को सदैव याद रखें। दीक्षांत शपथ के दस्तावेज को सम्भाल कर रखें। प्रतिदिन उसे दोहराएं और उसके अनुसार आचरण करें। आस-पास के वंचितों की जरूरतों की जानकारी लें। उनको पूरा करने का यथा संभव प्रयास करें। उन्होंने स्वामी विवेकानंद का उल्लेख करते हुए कहा कि हर व्यक्ति में अपार क्षमता है आवश्यकता अपनी शक्तियों को जगाने की है। उन्होंने विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय की गरिमा को बढ़ाने और समाज एवं राष्ट्र की सेवा में उत्कृष्ट योगदान को ढालकर प्रयास करने की है। अंधेरा कितना भी घना हो, दिया जलाने पर रोक नहीं लगाता है। उन्होंने कहा कि याद रहे मंजिल उन्हें मिलती है जिनके सपनों में जान होती है। पंख होना पर्याप्त नहीं, उड़ान का हौसला होना जरूरी है।

देने के लिए शुभकामनाएं दी।

भारतीय सूचना प्रौद्यौगिकी संस्थान भोपाल के निदेशक श्री आशुतोष सिंह ने महाभारत के मछली की आँख वाले प्रसंग का उल्लेख करते हुए बताया कि जीवन में सफलता के लिए कठिन प्रतिस्पर्धा हर युग में रही है, आगे भी रहेगी। भावी जीवन में भी रोज नई परीक्षा देनी होगी। आवश्यकता देश, काल और परिस्थिति के अनुसार स्वयं संपर्क का प्रभावी माध्यम भारतीय भाषाएं है। उन्होंने कहा कि गैर पारम्परिक हिन्दी विश्वविद्यालय के छात्रों का दायित्व है कि वह हिन्दी के मान सम्मान को समृद्ध और सफल बनाने में योगदान करें। उन्होंने विद्या?र्थियों को स्वामी विवेकानंद के विचारों से प्रेरणा लेने के लिए कहा है।

विश्वविद्यालय के कुलगुरू श्री खेम सिंह डहेरिया ने विश्वविद्यालय के प्रगति प्रतिवेदन का विवरण दिया। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय वाणिज्य,एम.बी.ए. तथा शिक्षा शास्त्र में स्नातकोत्तर उपाधि के साथ ही डेयरी संचालन में डिप्लोमा पाठ्यक्रम की आगामी सत्र से शुरुआत करेगा। कृषि एवं इंजीनियरिंग पाठ्यक्रम भी प्रारंभ किए जाएंगे। उन्होंने विश्वविद्यालय के प्रकाशनों का कार्यक्रम में लोकार्पण अतिथियों के द्वारा कराया। आभार प्रदर्शन कुलसचिव श्री शैलेन्द्र कुमार जैन ने किया।

कार्यक्रम के प्रारंभ में अतिथियों ने माँ शारदा की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित किये। उन्होंने स्व. वाजपेयी के चित्र पर पुष्पांजलि भी दी। दीक्षांत समारोह में राज्यपाल एवं मंचासीन अतिथियों का शॉल, श्रीफल, स्मृति प्रतीक एवं पौधा भेंट कर स्वागत किया गया। राज्यपाल ने विभिन्न संकायों के पदक विजेताओं को पुरस्कृत किया।

संचालक म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी श्री अशोक कडैल ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति आधुनिक तकनीकी और रोजगार मूलक शिक्षा व्यवस्था के साथ ही भारतीय संस्कृति की जड़ों से जुड़ी व्यवस्था है। अटल बिहारी वाजपेयी हिन्दी विश्वविद्यालय द्वारा इस दिशा में किए जा रहे प्रयासों का उल्लेख करते हुए कहा कि भारतीय जनमानस के साथ संवाद और

इंदौर के पार्षद जीतू को भाजपा ने बाहर निकाला

इंदौर (नप्र)। इंदौर में भाजपा पार्षद के घर में घुसकर हमले करने के 8 दिन बाद पार्टी ने एमआईसी मेंबर जीतू यादव (जाटव) को 6 साल के लिए बाहर निकाल दिया। प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा ने पूरे विवाद को अशोभनीय बताते हुए एक्शन लिया है।

3 जनवरी को 40-50 लोगों ने भाजपा पार्षद कमलेश कालरा के घर में घुसकर हमला किया था। कालरा के नाबालिग बेटे ने शुक्रवार को पुलिस को दिए बयान में बताया कि गुंडों ने उसके प्राइवेट पार्ट को भी चोट पहुंचाई। उसके साथ अप्राकृतिक कृत्य करने की बात कही।

नाबालिग ने बताया कि आरोपियों ने गालियां देकर उसके साथ मारपीट की।

युवा दिवस

एकता कानूनगो बक्षी

नए पत्तों से है जीवन की मुस्कान

अपने आपको सतत नवीकृत करना संभवतः प्रकृति का सब से मनपसंद काम है। अगर आस पास हम नज़र घुमाएं तो पाएंगे कि हर पुराना पेड़ अपने पुराने पत्तो को एक समय बाद त्याग देता है और उसकी जगह नए ताज़ा पत्ते पल्लवित होने लगते हैं।

यह एक चक्र सा चल रहा है जिसमें उम्रदराज पत्ते पीले होकर कुछ दिनों में झरते हुए नज़र आते हैं और उनकी जगह ले लेते हैं थोड़े से कुछ मजबूत और स्वस्थ पत्ते। कुछ दिनों बाद वे भी विदा हो जाते हैं। धीरे धीरे पेड़ नए और मुलायम छोटे छोटे पत्तों से भरने लगता है। ऐसा लगता है जैसे छोटे बच्चों की तरह के ये चमकीले मुलायम पत्ते नई दुनिया को देख कर उत्साहित हो खिलखिला रहे हों। हर पुराना पेड़ लंम्बे समय तक खुद को ताज़ा और युवा बनाए रखने कि इस प्रक्रिया को बखूबी समझता है और इस विधि को लगातार अपनाता नज़र आता है।

मनुष्य की प्रकृति भी इससे कुछ अलग नहीं है। यहां भी काफी समानता दिखाई देती है। शारीरिक रूप से तो पेड़ और इंसान दोनो ही धीरे धीरे क्षरण की ओर ही बढ़ रहे होते हैं, कई तरह की दैहिक, मौसमी और मानसिक परेशानियों,स्वास्थ्य समस्याओं के चलते लगातार चुनौतियां मिलती रहती हैं। किंतु ऐसे कई लोग मिल जायेंगे जो उम्र से तो युवा हैं पर मानसिक रूप से बूढ़े हो चुके हैं। इसका विपरीत भी देखने को अक्सर मिल जाता है, ऐसे कई बुजुर्ग भी मिल जाते हैं जो उम्र को चकमा देकर चिर युवा बने रहते हैं। ये दूसरी किस्म के लोग ठीक उस पेड़ की तरह होते हैं जो बरसों से एक जगह खड़ा है और हमे हर वक्त मुस्कुराता,परिपक्व व स्वस्थ दिखाई देता है क्योंकि वह अपने पुराने होते पीले सूखे पत्तों को समय समय पर झाड़ देता है और उनकी जगह देता है नए चमकदार पत्तों को जो उसे पूरी तरह नया कर देते हैं।

हमारे व्यक्तित्व में भीतर के विचारों के कारण ही हमारी परिपक्वता का भी पता चलता है। हमारे विचार पेड़ के पत्तो की ही तरह होते हैं जो हमें किसी भी उम्र में देह के क्षरण के बावजूद बूढ़ा या युवा महसूस करवाने की क्षमता रखते हैं। हमारे भीतर किन विचारों का उजियारा फैला है, किन विचारों के बादलों ने निराशा का अंधेरा कर दिया है, विचारों की हवा किस दिशा से आकर हमारे मन को प्रभावित कर रही है, इन्हे थोड़ा जान समझकर अपने जीवन के मौसम का अंदाज़ा हम लगा सकते हैं।

अक्सर बिन कारण का बुढ़ापा हमारे मायूस, उबाऊ,एकरसता,थके हारे विचारों से ही उपजता है। हमे भी पेड़ की ही तरह उन्हें अपने आप से दूर करते रहना चाहिए और नए,स्वस्थ,जोश और उत्साह से भरे सकारात्मक विचारों से खुद को पूरी तरह से नया बना लेना चाहिए।

अच्छे और बुरे विचारों का आना जाना एक सामान्य सा चक्र है पर मुसीबत तब होती है जब हम किसी एक विपरीत विचार या हमारी वर्तमान कठिन परिस्थिति को ही हमारे जीवन का पूर्ण अस्तित्व मान लेते हैं। जबकि एक समय बाद वैसे भी सब कुछ बदल जाता है यहां तक कि किसी भी तरह का कष्ट भी या तो समाप्त हो जाता है या फिर हममें ही उससे निपटने की शक्ति पैदा हो जाती है। दूसरे शब्दों में कहें तो तब उसका होना न होना लगातार हमारे दिमाग में विचारों के बादलों के रूप में नही घुमड़ता। इन अस्थायी विचारों के चलते हम बहुत सारा समय और उम्र का बड़ा हिस्सा निरर्थक तनाव में गुजार देते हैं। जिसका बुरा असर जीवन के हर पहलू पर नज़र आने लगता है। तनाव हमे कभी स्वाभाविक नही रहने देता।

जब कभी हम खुद को लंबे समय तक हताश, निराश विचारों से घिरा हुआ पाएं तो हमारे पास कई तरीके होते हैं उनसे निजात पाने के। मसलन,डायरी लेखन, सकारात्मक लेखों को पढ़ना,अपनो से सलाह मशवरा लेना,अपनी पसंद के काम, अपने पसंदीदा शौक में समय बिताना।

इसके साथ ही एक और अद्भुत तरीका है जो हमे न केवल विपरीत विचारों की कैद से आज़ाद करता है साथ ही हमारे भीतर नव ऊर्जा का संचार करने में भी कारगर है। वह है अपने जीवन के बीते हुए सब से बेहतरीन पलों को फिर से दोहराना। हमारे जीवन की खूबसूरत स्मृतियों को याद कर किसी फिल्म के सुखद फ्लैशबैक से गुजरने की कोशिश करना। अपने श्रेष्ठतम समय के हमारे व्यवहार, आत्मविश्वास, मेहनत,हौसले, क्षमता के बारे में सोचना और अपने मनोबल को बढ़ाना, सब कुछ हमारे ही हाथ में होता है। जैसे पेड़ अपने को नवीकृत करता है हम भी कुछ ऐसे ही अपने को नई बहार और नई ऊर्जा से भर सकते हैं।

हो सके तो कभी कभी उन पुरानी गलियों की भी वास्तविक रूप में सैर कर आना चाहिए। उन लोगो से मिलना चाहिए जो हमारे सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन से परिचित हैं। बीते हुए समय मे इस तरह से पुनः गुजरना हमे मौका देता है खुद को एक बार फिर से ठीक तरह से समझने का,खुद की खुद से मुलाकात का, हमारी पुरानी ऊर्जा, हिम्मत,रवैये को खींच कर हमारे वर्तमान में लाने का। सच तो यह है कि हमारी मदद हर हाल में हमसे बेहतर कोई और नही कर सकता।

बात इतनी सी है कि बस पुराने हो गए कुछ पीले पड़ गए विचारों से खुद को मुक्त करना जरूरी है। नए पत्तों को मौका देना होगा। जिंदगी फिर खिलखिलाने लगेगी।

पुस्तक समीक्षा

सहस्राब्दी पुस्तक का फ्लैप

प्रतियोगी छात्रों, राजनीतिक विश्लेषको और शोधकर्ताओ के लिए उपयोगी ''सहस्राब्दी'' पुस्तक एक हजार वर्षो के घटनाक्रम के संकलन को समाहित कर लिखी गई''सहस्राब्दी'' पुस्तक भारतीय इतिहास को समेटे हिन्दी का एसा संदर्भ ग्रंथ है जो प्रतियोगी परीक्षाओ मे शामिल होने वाले छात्रों, राजनीतिक विशेषज्ञो और शोधकर्ताओ के लिए उपयोगी है इस पुस्तक के संकलन संपादक रामभुवन सिंह कुशवाह वरिष्ठ पत्रकार लेखक होने के साथ साथ सामाजिक कार्यकर्ता भी है श्री कुशवाह द्वारा संपादित इस संदर्भ ग्रंथ पुस्तक की विषय सूची अत्यंत सार्थक और व्यवहारिक है इसमे भारत और विशेषकर मध्यप्रदेश का लेखा-जोखा है इस संदर्भ ग्रंथ मे एतिहासिक, भौगोलिक, सामाजिक सांस्कृतिक पक्षो को भी बड़ी लेखनीय कौशलता से समाहित किया गया है इस संदर्भ ग्रंथ पुस्तक मे विश्व भर के महापुरुषों की सचित्र जीवनी भी दी गई है

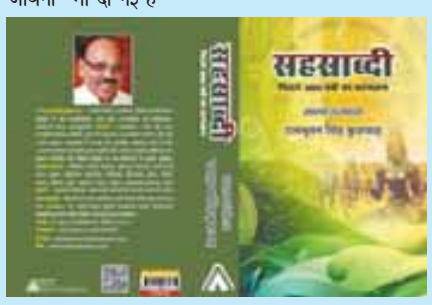

यू तो अँग्रेजी मे मिलेनियम पर और भी पुस्तके उपलब्ध है पर भारतीय दृष्टिकोण से उसका कोई मेल नही है अँग्रेजी पुस्तकों मे विश्व की प्राचीन संस्कृति की जननी भारत भूमि के बारे मे दी गई जानकारी या तो अपूर्ण है या फिर जानबूझकर भारत को दुर्लक्ष्य करने का प्रयास किया है उदाहरण बतौर सिंधुघाटी की सभ्यता को प्राचीन संस्कृति माना जाता है जबकि भारत की ज्योतिष काल गणना के अनुसार दुनिया कई लाख बर्ष पुरानी है जिसका उल्लेख भी इस पुस्तक मे विस्तार से दिया गया है संदर्भ ग्रंथ के खंड तीन भारत की सहस्राब्दी मे पृष्ठ क्रमांक 198 पर राजशाही से से लोकशाही की ओर तथा पृष्ठ कृमांक 304 पर रामजन्म भूमि के लिए संघर्ष की संकलित जानकारी अदूतीय है

वेसे तो संदर्भ ग्रंथ मे विश्व ,देश और प्रदेश मे घटित प्रमुख घटनाओ को क्रमबद्ध प्रस्तुत करने के साथ अन्यान्य विषयो को छूने का अच्छा प्रयास है यह पाच खंडो मे विभाजित एक हजार वर्षो के प्रमुख घटनाक्रम इतिहास को समेटे 637 पृष्ठ का ''सहस्राब्दी'' पुस्तक संदर्भ दस्तावेज़ के रूप मे अति महत्वपूर्ण है उसमे भी अंतिम पाचवा खंड भारतीय महापुरुष सहस्राब्दी की विभूतियों का जीवन परिचय एक साथ संकलित होना अविरल है।

संपादक : रामभुवन सिंह कुशवाह
प्रकाशक : अनुज्ञा बुक्स,दिल्ली 23
मूल्य:800/रुपए
उपलब्धता,: प्रमुख पुस्तक विक्रेताओं के यहां

लघुकथा

डॉ. श्यामबाबू शर्मा

आपद्धर्म

नये साल की शुरुआत और शुभकामनाएं। कभी चिट्ठी पत्री में लिख दिया जाता था नव वर्ष मंगलमय हो। समय बदला तो रंग बिरंगे ग्रीटिंग कार्ड्स बाजार में महीने भर पहले ही सज जाते। चलभाष आया और सब चलताऊं निपटाने की संस्कृति ने दस्तक दी। स्क्रीन टच ने स्क्रीन को छोड़कर सबसे अस्पृश्यता का रिश्ता बना लिया। इनकी फोटो उनको और उनकी इनकी प्रेषित संप्रेषित कर हैप्पी न्यू ईयर। पहले लिखना छूटा फिर सोचना और तदनंतर संवेदना का क्रिया कर्म।

जनवरी की ठंड में ढके लिपटे चेहरे यकायक मुस्कों में ढकने लगे। जैसे छुआछूत का नवाचार आ गया हो। संदर्भ प्रसंग खोज खोज कर इंसान और इंसानियत के बीच खुद को जिंदा रखना ही सर्वोपरि हो गया। हारी बीमारी और महामारी के ग्रास में कायनात सिसकने लगी। पड़ोसी पड़ोसी का फिक्रमंद हो गया। गांव घर से दूर रोजी रोटी की तलाश में मशक्कत करने वाले लौट पड़े अपने घरों को। जो न लौट सके उन्होंने सब कुछ नियति पर छोड़ दिया। 'रहे तो मिलेंगे।'

अच्युत के सर्विस स्टेशन में उसकी क़ौम बिरादरी के लोगों की संख्या महज दो चार फीसद शेष अल्पसंख्यक ही यहां बहुसंख्यक।

रविवार का दिन। सारा शहर इस दिन बंद रहता था। और लॉकडाउन में क्या सन्डे क्या मन्डे। उसके आफिस में रोटेशन चल रहा था। वह अपने विभाग में अकेला था। वही शैतान वही पुरोहित। दो चार दिनों से नासाज तबीयत और जब रिपोर्ट आई तो कोविड पॉजिटिव। घर में सन्नाटा पसर गया। पत्नी और एकल परिवार के दो बच्चे। एंबुलेंस आई और...। वक्त ऐसा कि जो हॉस्पिटल से लौट आए तो पुनर्जन्म। तीन दिन बीत गए। अच्युत हास्पिटल में। पूर्णिमा जाती पूरी किट में कैद होकर। दूर से देखती और वापिस।

हलो हम सिविल हॉस्पिटल से बोल रहे हैं। आपके हस्बैंड को चार यूनिट ब्लड तुरंत चाहिए। हमारे पास ब्लड बैंक में नहीं है। आप दो ब्लड डोनर लेकर जितनी जल्दी हो सके हॉस्पिटल पहुंचिए।

कॉल कट हो गई। पूर्णिमा कुछ न कह पाई। कहां से लाये। किसको कहे। अगल बगल में सब? संकल्प ने रास्ता खोजा, 'मम्मा समीम अंकल को कह कर देखें?' मां ने तस्दीक की। परिवार को बस्स ब्लड चाहिए था चाहे जैसे!

वह कालखंड सोचकर आज़ कोई ट्रैजिक इवेंट याद नहीं करना चाहता है। छोटे बेटे की बर्थडे पार्टी कोरोना महामारी के बाद पूरे हर्षोल्लास से। आफिस का स्टाफ और कुछ बराबर के लोग। मेहमानों की लिस्ट बनाते समय बेटे ने जुड़वाना चाहा, समीम अंकल भी?

नहीं वह हमारे मज़हब के नहीं हैं।

डैडी आपको ब्लड तो उन्होंने ही दिया था।

आवाज गूंजी- आपद्धर्म आपद्धर्म आपद्धर्म...।

शंकरानंद की कविताएं

1. जो दिखाई नहीं देते

कोई तस्वीर सहसा दिख जाती है
कुछ उलटते पुलटते
फिर लगता है कि
इसे देखे बहुत दिन हो गए
मिलना इतना पुराना हो गया कि
अब डर सा लगता है कि उसे
फोन करूं तो कोई दूसरा न उठा ले और
मन को कंपकंपा दे यह कह कर
वे इस दुनिया में नहीं रहे

फोन में ऐसे दर्जनों नंबर हैं
जिनसे बात नहीं होती
जिनसे कोई संवाद नहीं हुआ वर्षों से
वे दोस्त थे
परिचित थे
वे रिश्तेदार भी थे
इधर उनकी कोई खबर नहीं मिली
कोई हलचल नहीं हुई
गुमनाम हो गए वे

मैं भी भूल गया कि
उनसे कभी परिचय भी था
सिर्फ एक पता था मेरे पास
सिर्फ एक नंबर
जिससे फिर से जुड़ा जा सकता था

हाल के वर्षों में
किसी को लंबे समय तक नहीं देखना भी
भयभीत कर देता है अब

देखते रहो
सुनते रहो
मिलते रहो तो
लगता है कि
सब ठीक है अभी।

2.खाली जगह

आसमान के खाली वर्तन में
बादल का पानी कांप रहा है
इसमें मिट्टी की परछाईं
पानी को याद दिलाने की
एक कोशिश भर है कि
उसे अंततः बरसना है

बरसना भूल जाना
बादल की पुरानी आदत है
जिसका नतीजा
अकाल है
सूखे हुए पेड़ और
दरारों की दुनिया है

एक बादल की खाली जगह
इस धरती को
सुनसान बना देती है
एक बूंद पानी की कमी
प्यास को
आसमान बना देती है

जगहों का होना
किसी की याद दिलाता है
वह नहीं आता तो
उसकी याद आती है
एक हूक उठती है और
रुकना भूल जाती है
करुण पुकार।

समीक्षा

आदित्य दुबे
(लेखक वेबसाइट ई-अंतर्भव के प्रबन्ध संचालक हैं ।)

संवेदना के चरम पर सम्बन्ध पारिभाषिक करती वेबसिरीज

भारत में चिकित्सा सेवा का व्यवसाय, अन्य व्यवसायों से इस मायने में भिन्न और अपेक्षाकृत कठिन व्यवसाय है क्योंकि इसमें सेवा प्रदाता पर अपेक्षाओं का बोझ कुछ ज्यादा होता है और उनकी छोटी- सी चूक पर भी उन्हें उपभोक्ताओं यानी मरीज़ और उनके परिजन के रोष का सामना करना पड़ता है । चिकित्सकों बनाम डॉक्टर्स की इसी कामकाजी ज़िन्दगी और उनकी निज़ी ज़िन्दगी की जटिलता और जद्दोजहद की तथा-कथा है यह वेबसिरीज़-' डॉक्टर्स '। डॉक्टर्स की निजी और व्यावसायिक जिन्दगी की कहानियों पर फिल्में या सिरीज़ बहुत कम बनी हैं। यदि आप टीवी सीरियल्स के नियमित और गम्भीर प्रेक्षक हैं तो आपने 'संजीवनी ' और ' दिल मिल गए ' जैसे डॉक्टर्स पर केन्द्रित सीरियल्स ज़रुर देखें होंगे । इन्हीं सीरियल्स को बनाने वाली कम्पनी एलकेमी फिल्म्स ने देश की सम्भवतः पहली चिकित्सकीय वेबसिरीज़ 'डॉक्टर्स 'बनाई और विस्मय होता है कि इसके बारे में न तो जियो सिनेमा ने ज्यादा प्रचार किया है और न ही इसके सितारों ने। बिना किसी भारी भरकम प्रचार के रिलीज़ हुई यह वेब सिरीज़ एक संवेदनशील कहानी है। इसमें रिश्तों की गहराई , कटाक्ष की कड़ुआहट ,दोस्ती की उष्णता और प्रेम सम्बन्ध की मधुरता है । यह सिरीज़ संवेदना के चरम पर सम्बन्ध को पारिभाषिक करती है ।

यह वेबसिरीज़ एक फाईव स्टार अस्पताल और उसमें काम करने वाले डॉक्टर्स की कहानी है जिसे शहर के एक पुलिस थाने पर हमला होने पर घायल पुलिसवालों को सरकारी अस्पताल से ज्यादा ध्यान दिये जाने का मसला उठाया गया है । यह किस्सा हालांकि वेबसिरीज़ के बीच में आता है। सिरीज़ की शुरुआत उस रहस्य के साथ होती है कि अपने भाई को अपाहिज करने के लिए जिस डॉक्टर ईशान को डॉक्टर नित्या जिम्मेदार मानती है, उससे वह बदला लेना चाहती है । नित्या के बैच में और भी डॉक्टर हैं। रेजीडेंट डॉक्टरों की रोजमर्रा की जिंदगी की दिक्कतें भी काफी मेहनत के साथ दिखाई गई है ।इस सिरीज़ में एक वर्चुअल लैब भी है, जहां डॉक्टर ईशान अपनी गलती सुधारने के लिए लगातार प्रयोग कर रहा है। डॉ. अभि उसका मददगार है। और, देखने वाली

बात यह है कि अब शायद नित्या को ईशान से प्यार है। कहानी ऐसे ही प्रसंगों के साथ कई क्षेपक के साथ आगे बढ़ती है और सबसे अच्छी बात यह है कि मूल विषय से वह एक फ्रेम में भी नहीं भटकती है ।अगर आपने किसी अपने को अस्पताल में इलाज के दौरान खोया है तो सम्भलकर देखिएगा क्योंकि यह सिरीज काफी इमोशनल है और इसके चलते आपकी आँखें बार बार भर आएंगी। सबसे अच्छी बात यह है कि सिरीज़ में कहीं भी अतिरेक नहीं है ,न कथा को लेकर न? उसके फिल्मांकन को लेकर ।

इस वेबसिरीज़ में आमजन की इस वृत्ति को लक्षित कर कहानी की बुनावट की गई है कि जब वह अस्पताल में किसी अपने को इलाज़ के लिये ले जाता है और प्रारब्धवश उसे खो देता है तब वे इस बात को सोच भी नहीं पाते होंगे कि मरीजों का इलाज करने वाले भी विकट मानसिक परिस्थिति से गुजर रहे होते हैं। हम बस उन्हें वर्दी पहने डॉक्टर या नर्स के रूप में देखते हैं। भूल जाते हैं कि उस सफेद कोट के पीछे एक इंसान है जिसकी अपनी जिंदगी में प्रेमिका रूठी हुई हो सकती है। भाई अपाहिज हो सकता है। ड्रग्स की लत छुड़ाने की जद्दोजहद से वो गुजर रहा हो सकता है और ये भी कि किसी अपने साथी को बचाने के लिए वह उसका गुनाह अपने सिर ढो रहा हो सकता है। क्रिकेटर्स की अनैतिक मदद करने से लेकर दिमाग के ऑपरेशन के समय पसंदीदा गीत गाने तक की असल घटनाएं भी इस सिरीज में शामिल हैं। परदे पर जो ऑपरेशन दिखते हैं वे सब असली चिकित्सकों ने किए हैं। और, एक तरह से देखा जाए तो वेबसिरीज़ 'डॉक्टर्स' इसके रचयिता सिद्धार्थ पी मल्होत्रा की अपने डॉक्टर नाना को दी गई सच्ची श्रद्धांजलि है जो 96 साल की उम्र तक मरीजों का इलाज करते रहे। सिद्धार्थ ने यह सिरीज बहुत जतन और पूरे मनोयोग से बनाई है, वैसे ही जैसे उन्होंने आमिर खान के बेटे जुनैद की पहली फिल्म 'महाराज' बनाई थी ।

वेबसिरीज की कहानी सार्थक और सटीक है, पटकथा की गतिशीलता भी हर एपीसोड में बनी रहती है।संवाद भी कहानी के मिज़ाज के अनुकूल है और विषय के हिसाब से लिखे गये है ।लेकिन, राधिका आनन्द को कमज़कम यह जानकारी तो होनी चाहिए कि सूबेदार फौज में होते हैं, पुलिस में नहीं। विवियन सिंह साही की सिनेमाटोग्राफी भी मनोरम है । उनका कैमरा पहले एपीसोड से ही दर्शकों को कहानी का हिस्सा बनाने में काफी हद तक सफल रहा है। सिरीज़ का बैकग्राउंड म्यूज़िक और सम्पादन भी अच्छा है। अभिनय के परिप्रेक्ष्य में यह सिरीज़ शरद केलकर और हरलीन सेठी की है। शरद केलकर की दो तीन दिन की दाढ़ी उन्हें कूल लुक देती है यह बात और है कि ऑपरेशन थियेटर में काम करने वाले डॉक्टर अमूमन दाढ़ी मूँछ सफाचट ही रखते हैं। हरलीन सेठी सिरीज दर सिरीज अपनी जगह बनाती चल रही हैं। विवान शाह और उनके बीच की केमिस्ट्री लाजवाब है। विराफ पटेल का अभिनय भी असरदार है। कुल मिलाकर बिंच वॉच लायक बन पड़ी इस वेबसिरीज को देखते समय इस बात की कसक बाकी रह जाती है कि इसकी छोटी छोटी कमियां दूर कर ली जातीं तो ये सिरीज 'संजीवनी' के आगे की बात हो सकती थी।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

राष्ट्रीय युवा दिवस

डॉ भूपेन्द्र कुमार

शिक्षाविद, लेखक पत्रकार

स्वामी विवेकानंद सनातन संस्कृति के महान संवाहक

वेदान्त के समकालीन और भविष्योन्मुखी प्रयोगशीलता के प्रखर विद्वान, आध्यात्मिक शिक्षाविद दूरदर्शी विचारक, स्वामी रामकृष्ण परमहंस' के शिष्य और निर्भीकता एवं साहस की प्रतिमूर्ति, युवाओं के लिए सकारात्मक उपदेश, सामाजिक समस्याओं के प्रति व्यापक दृष्टिकोण से ओतप्रोत, एक विपुल वक्ता और रामकृष्ण मठ एवं रामकृष्ण मिशन के संस्थापक नरेंद्रनाथ दत्ता उपाख्य स्वामी विवेकानंद का जन्म पौष कृष्ण पक्ष, सप्तमी, 1919 विक्रम संवत तदनुसार ग्रेगोरियन पंचांग के 12 जनवरी 1863 को हुआ था। स्वामी विवेकानंद जी ने युवाओं को समाज सेवा के महत्व का संदेश देने, उनका मार्गदर्शन करने और उनमें उच्च चरित्र और नेतृत्व के गुणों की आधारशिला रखने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया । गरीबों के प्रति उनकी सेवा की अवधारणा ने कई युवाओं के मन में प्रेरणा जगाने में सहायता की और इसके अतिरिक्त परतंत्रता के दिनों में ब्रिटिश उपनिवेवाद के चंगुल में जकड़े देश से निकलकर विश्वमंच पर भारतीय अध्यात्म और ज्ञान का परचम लहराना उनके प्रमुख योगदानों में से एक मुख्य मील का पत्थर है । उनका जन्मदिन (12 जनवरी) प्रतिवर्ष राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है।

स्वामी विवेकानंद जी का जन्म 12 जनवरी 1863 को एक संभ्रांत बंगाली परिवार में कलकत्ता में हुआ था। उनके बचपन का नाम नरेंद्रनाथ दत्ता था। उनके पिता, विश्वनाथ दत्ता कलकत्ता उच्च न्यायालय में एक वकील थे। दुर्गाचरण दत्ता, नरेंद्र के दादा एक संस्कृत और फ़ारसी विद्वान थे, जिन्होंने अपने परिवार को छोड़ दिया था और 25 साल की उम्र में एक भिक्षु बन गए। स्वामी विवेकानंद को 1870 में श्री ईश्वरचंद विद्यासागर द्वारा स्थापित स्कूल में भर्ती कराया गया था। मैट्रिक के बाद वे कोलकाता में प्रेसीडेंसी कॉलेज में प्रवेश लिए और दर्शनशास्त्र में एमए पूरा किया।

अपने गुरु से मिलना और सन्यास स्वीकार करना

नरेंद्र श्री रामकृष्ण से 1881 में अपने पड़ोसी सुरेंद्रनाथ के घर पर मिले थे। शुरू में कुछ दिनों के लिए श्री रामकृष्ण ने नरेंद्रनाथ को एक पल के लिए भी अपना पक्ष रखने की अनुमति नहीं दी। उन्होंने बहुत सलाह के बाद नरेन्द्र को अपने पास बैठाया। जब दोनों अकेले होते तो बड़ी चर्चा होती।

श्री रामकृष्ण ने नरेंद्र को उनके अधूरे मिशन को पूरा करने की जिम्मेदारी देने का फैसला किया था। एक दिन श्री रामकृष्ण एक कागज़ में लिखकर दिया , 'नरेंद्र जनता को ज्ञान देने का काम करेंगे।' कुछ संकोच के साथ नरेंद्रनाथ ने उत्तर दिया, 'मैं यह सब करने में सक्षम नहीं हूँ।' श्री रामकृष्ण तुरंत बड़े संकल्प से बोले, क्या? नहीं कर पाएंगे? आपकी हड्डियाँ यह कार्य करेंगी। बाद में श्री रामकृष्ण ने नरेंद्रनाथ को संन्यास के मार्ग पर चलाया और उन्हें स्वामी विवेकानंद नाम दिया। श्री रामकृष्ण की मृत्यु 16 अगस्त 1886 को हुई थी। श्री रामकृष्ण ने स्वामी विवेकानंद को सिखाया कि मानव की सेवा ईश्वर की सबसे प्रभावी पूजा है।

श्री रामकृष्ण की मृत्यु के बाद, विवेकानंद ने रामकृष्ण के काशीपुर मठ की जिम्मेदारी ली। उन्होंने मठ को बारानगर स्थानांतरित कर दिया। 1899 में मठ को बेलूर स्थानांतरित कर दिया गया था। इसे अब बेलूर मठ के रूप में जाना जाता है।

विवेकानंद की यात्राएं

विवेकानंद ने 1888 से भारत में भ्रमण शुरू कर दिया था। वह लगभग पूरे पांच साल भारत में भटकते रहे और अलग-अलग तरह के लोगों के साथ रहे। विवेकानंद जुलाई, 1893 को शिकागो गए। उस समय वहाँ विश्व धर्म का संसद आयोजन हो रहा था। लेकिन पहली बार में पहचान के अभाव के कारण, उन्हें बोलने का अवसर नहीं दिया गया था। लेकिन हार्वर्ड यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर जॉन हेनरी राइट की मदद से उन्हें बोलने का मौका मिला।

11 सितंबर 1893 को विश्व धर्म संसद में, उन्होंने हिंदू धर्म पर अपना पहला संक्षिप्त भाषण दिया। उन्होंने अमेरिका की बहनों और भाइयों के साथ अपने भाषण की शुरुआत की। इस भाषण के साथ उन्हें वहां जमा हुए सात हजार लोगों की तालियों की गड़गड़ाहट का सम्मान मिला।

शिकागो के भाषण के बाद, उन्होंने विश्व भर में कई भाषण दिए और कई लोगों जैसे कि बहन निवेदिता, मैक्स मुलर, पॉल डूसन और कई और लोग के साथ मुलाकात की ।

उन्होंने 1 मई 1897 को रामकृष्ण मिशन की स्थापना की।

विवेकानंद जी ने लाहौर में अपने संक्षिप्त प्रवास के दौरान तीन व्याख्यान दिए। इनमें से पहला 'हिंदू धर्म के सामान्य आधार' पर था, दूसरा 'भक्ति' पर, और तीसरा 'वेदांत' पर प्रसिद्ध व्याख्यान था।

स्वामी विवेकानंद का विज्ञान और आध्यात्मिकता के एकीकरण की दृष्टि

भारतीयता की आवश्यकता के साथ विज्ञान और आध्यात्मिकता के लिए उनकी प्यास निम्नलिखित पंक्तियों में देखी जा सकती है- अगर मुझे कुछ अविवाहित स्नातक मिल सकते हैं, तो मैं उन्हें जापान भेजने और वहां उनकी तकनीकी शिक्षा की व्यवस्था करने की कोशिश कर सकता हूं, ताकि जब वे वापस आएं, तो वे अपने ज्ञान को भारत के लिए सबसे अच्छे खाते में बदल सकें। इससे अच्छी बात क्या होगी! 'मित्र ने पूछा,' क्यों महाराज, क्या इंग्लैंड की तुलना में हमारे लिए जापान जाना बेहतर है? स्वामी जी ने उत्तर दिया, निश्चित रूप से! मेरी राय में, यदि हमारे सभी अमीर और पढ़े-लिखे आदमी एक बार जापान जाकर देख लें, तो उनकी आँखें खुल जाएंगी। जापान में, आप ज्ञान का एक अच्छा आत्मसात पाते हैं, न कि इसका अपच, जैसा कि हमारे पास है। उन्होने यूरोपीय लोगों से सब कुछ ले लिया है, लेकिन वे सभी जापानी समान हैं, और यूरोपीय नहीं बने; जबकि हमारे देश में, पश्चिमी बनने के भयानक उन्माद ने हमें एक प्लेग की तरह पकड़ लिया है।

स्वामीजी ने विज्ञान पर बहुत अधिक निर्भरता के खतरों के प्रति सचेत किया और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के साथ भारत की आध्यात्मिक विरासत को संरक्षित करने पर जोर दिया। उन्होंने कहा 'भौतिक विज्ञान केवल सांसारिक समृद्धि दे सकता है, जबकि

आध्यात्मिक विज्ञान शाश्वत जीवन के लिए है। यदि कोई शाश्वत जीवन नहीं है, तब भी आदर्शों के रूप में आध्यात्मिक विचारों का आनंद सहकर्मी है और एक आदमी को अधिक खुशहाल बनाता है, जबकि भौतिकवाद की मूर्खतापूर्ण प्रतिस्पर्धा और अवांछनीय मृत्यु और व्यक्तिगत मृत्यु की ओर ले जाती है, इसलिए व्यक्तिगत और राष्ट्रीय दोनों में आध्यात्मिकता को एकीकृत करता है। पेशेवर जीवन बेहतर प्रदर्शन करने की क्षमता को बढ़ाता है।'

विवेकानंद के जीवन के अन्य आयाम

वर्ष 1884 का समय था, जब अचानक नरेंद्र के पिता की मृत्यु हो गई और संपूर्ण परिवार दिवालिया सा बन गया था। साहूकार दिए हुए कर्जे को वापस करने की मांग कर रहे थे और उनके रिश्तेदार ने भी उनके पैतृक घर से उनके अधिकार को हटा दिया था।

ऐसी स्थिति में नरेंद्र काफी विचलित हो गए थे। परंतु अपने आप को संभालते हुए वे कोई काम ढूंढने के असफल प्रयास में लग गए और जब भगवान के अस्तित्व का प्रश्न उनके सामने निर्मित हुआ।तब रामकृष्ण के पास उन्हें संतुष्टि मिली और उन्होंने दक्षिणेश्वर जाना आना बढ़ा दिया। एक दिन रामकृष्ण ने नरेंद्र से उनके परिवार की आर्थिक भलाई के लिए माता काली के सामने प्रार्थना करने को कहा और नरेंद्र ने भी उनके बातों को स्वीकार करते हुए करीब तीन बार मंदिर गए।परंतु वे हर बार अपनी जरूरत की पूर्ति करने के बजाए खुद को सच्चाई के मार्ग पर ले जाने और लोगों की भलाई करने की प्रार्थना करते थे। मंदिर जाने के क्रम में ही एक बार नरेंद्र को भगवान की अनुमति की एहसास हुई और तब से वे भी अपने गुरु रामकृष्ण के साथ दक्षिणेश्वर मंदिर में रहने लगे। बात 1885 की है, जब पता चला कि रामकृष्ण को गले का कैंसर हुआ और इस वजह से उन्हें कलकत्ता जाना पड़ा और बाद में काशीपुर गार्डन जाना पड़ा।

परंतु रामकृष्ण जानते थे कि यह मेरे जीवन का अंतिम क्षण है तब उन्होंने नरेंद्र को अपने मठवासियों का ध्यान रखने को कहा और कहा कि मैं तुम्हें एक गुरु के रूप में देखना चाहता हूं और 16 अगस्त 1886 को काशीपुर मे सुबह के समय उन्होंने अपना अंतिम सांस लिया। गुरु के मृत्यु से नरेंद्र को कुछ समय के लिए तो काफी बड़ा धक्का लगा।

सन् 1896 तक वे अमेरिका में रहे। विश्व धर्म सम्मेलन से लौटने के बाद पुनः 1897 में स्वामी जी खेतड़ी नरेश अजीत सिंह से मिलने पहुंचे। जो उनकी आखिरी मुलाकात थी। जब स्वामी जी ने अपने व्याख्यान से अमेरिका में विजय परचम फहराया तो सबसे बड़ी प्रसन्नता राजा अजीत सिंह को हुई।इस प्रकार ब्रिटिश शासन में जब भारत माता परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़ी हुई थी। उस समय विश्व के मंच पर भारत को पहचान दिलाने का श्रेय विवेकानंद नामक इस महान व्यक्ति को जाता है।

शिकागो में उनके कालजयी भाषण के अलावा उनके 'भारत का भविष्य' शीर्षक वाले भाषण पर भी चर्चा होनी चाहिए जिसे स्वामी विवेकानंद जी ने 14 फरवरी, 1897 को मद्रास में दिया था।

यहां उनके उस विस्तृत व्याख्यान से कुछ संक्षिप्त बातें दी गई हैं जो आधुनिक भारत के सबसे दूरदर्शी निर्माताओं में से एक के द्वारा हमारे लिए आगे के कार्य की रूपरेखा प्रदान करती हैं।

1. वह भारत की शाश्वत विरासत को ज्ञान, आध्यात्मिकता और दर्शन के अभयारण्य के रूप में मान्यता देने का आह्वान करते हैं।

2. भारत के समक्ष समस्या यह है कि इसकी जटिलता और विविधता अन्य सभी देशों से अधिक है और यह बहुआयामी चुनौतियों को उजागर करता है।

3. जटिल विविधता के बावजूद, एकता का निर्माण किया जा सकता है क्योंकि भारत के भविष्य की नींव पवित्र सामान्य धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं में निहित है।

4. कृपया आपस में झगड़ा न करें और समृद्ध भविष्य के भारत के लिए धार्मिक विविधता को एकजुट करें।

5. भारत आध्यात्मिक रत्नों का एक बड़ा भंडार है, समावेशी शिक्षा और सांस्कृतिक ज्ञान के विस्तार के लिए इसे लोकतांत्रिक और लोकप्रिय बनाना है।

6. जाति की समस्या का समाधान निचले स्तर को उच्च स्तर तक बढ़ाना है, न कि उच्च को नीचे लाना। विशेषाधिकार प्राप्त लोगों को यह जिम्मेदारी अपने कंधों पर लेनी चाहिए।

7. संगठन की शक्ति को समझें और मनोवैज्ञानिक उन्नयन के लिए इसे सक्रिय करें और सामूहिक प्रभाव का स्रोत बनें

8. भारत की एकता और भारत माता पूजा का आह्वान करते हुए उन्होंने कहा कि अगले पचास वर्षों तक केवल यही हमारी मुख्य बात होगी - यह हमारी महान भारत माता। अन्य सभी व्यर्थ देवताओं को हमारे मन से कुछ समय के लिए निकाल दें। यह एकमात्र देवता है जो जाग रहा है। यह हमारी अपनी जाति - उसके हाथ, उसके पैर, उसके कान, हर स्थान को हर प्रकार से आच्छादित करता है। सबसे पहले पूजा विराट की पूजा है - हमारे चारों ओर के लोगों की। इनकी पूजा करें। हमें एक-दूसरे से ईर्ष्या करने और एक-दूसरे से लड़ने के बजाय इनकी पूजा करनी होगी। स्वामी जी ने 1 मई 1897 में अपने गुरु के नाम पर रामकृष्ण मिशन कोलकाता में और गंगा नदी के किनारे बेलूर में रामकृष्ण मठ की स्थापना 9 दिसंबर 1898 को की । उन्होंने कई ग्रंथों ज्ञानयोग, राजयोग, योग इत्यादि की रचना की जिसके द्वारा युवा वर्ग के लोगों को एक नयी चेतना का संचार हुआ जिसका प्रभाव सदियों तक जनमानस पर छाया रहेगा।

प्रतिदिन की भांति 4 जुलाई 1902 की सुबह जल्दी उठ स्नान आदि करके बेलूर मठ के पूजा घर में पूजा करने के बाद नियमानुसार स्वामी जी ने योग किया। तत्पश्चात अपने शिष्यों को वेद, संस्कृत और योग साधना के बारे में पढ़ाया और बाद में रामकृष्ण मठ में वैदिक महाविद्यालय बनाने पर विचार विमर्श किए। उसी दिन करीब 7:00 बजे रामकृष्ण मठ स्थित अपने कमरे में ध्यान मग्न अवस्था में महासमाधि धारण कर 40 वर्ष की आयु में अपने जीवन का अंतिम सांस ली। इस प्रकार, भारत की इस धरती पर एक महान आत्मा के रूप में अवतरित और इस धरती की ताकत पूरे विश्व को दिखाने वाले स्वामी विवेकानंद इस धरती से अंतिम विदा लेकर चले गए ।

स्वामी विवेकानंद जयंती विशेष

अमित राव पवार

लेखक-युवा साहित्यकार

चिंतन करो, चिंता नहीं, नए विचारों को जन्म दो! स्वामी विवेकानंद

विश्व के समक्ष भारतवर्ष की सभ्यता-संस्कृति और प्राचीन परंपरा को सही मायनों में बताने वाले युवा सन्यासी स्वामी विवेकानंद ने भारत की आध्यात्मिक दृष्टि को भी नजदीक से जाना। उन्होंने समाज का चिंतन करते हुए नर सेवा में नारायण सेवा को चुना। युवाओं के प्रेरणास्रोत स्वामी विवेकानंद जी का कहना था, चिंतन करो,चिंता नहीं,नए विचारों को जन्म दो! आज के वर्तमान परिदृश्य को देखते हुए उनका यह कथन समाज को आत्मसात करने की अत्यधिक आवश्यकता है,क्योंकि समाज आज चिंतन को छोड़ चिंता में अधिक डूबा दिखाई दे रहा है। युवाओं के भविष्य की चिंता करते माता-पिता,रोजगार की तलाश में अवसाद में डूबता युवा,दूसरों की उन्नति से ईर्ष्या करते लोग यह सब चिंता का विषय वर्तमान परिदृश्य में हमें देखने को मिल रहा है,इसलिए स्वामी जी ने चिंतन पर जोर देते हुए नए विचारों को जन्म देने की बात कही,अधूरा ज्ञान हमेशा चिंता का कारण बनता है जबकि पूर्ण ज्ञानी चिंता नहीं चिंतन करते हैं कुछ पाने की चाह ओर खोने का डर बस इन्ही के मध्य चिंता व चिंतन है। किसी आवश्यक कार्य में विलंब हो रहा हो,और बुद्धि अशांत होने लगे ये चिंता कहलाती है। जबकि चिंतन किसी समस्या,कठिनाइयों से बाहर आने का रास्ता खोजने व अपने स्रोतों के आधार पर समय,परिस्थितिनुसार नए विचारों को जन्म देकर सकारात्मकता के साथ कार्य समाधान निकालना यह चिंतन कहलाता है। चिंतन को आध्यात्मिक दृष्टि से भी देखा जा सकता है।

चिंतन का अर्थ ही है किसी समस्या या कठिनाई का हल करना निरंतर शुभ के चिंतन से मन,बुद्धि और हृदय पवित्र होता है चिंता दूर होती है मन की चंचलता नष्ट होती है हम सत्संग व स्वाध्याय करते हैं वहां भी चिंतन होता है चिंतन हमें अपनी चेतना के आंतरिक क्षेत्र में जाने के लिए मार्गदर्शन करता है। चिंतन का अर्थ विचार करना, अध्ययन करना जबकि इन सभी शब्दों का तात्पर्य है किसी फैसले

अथवा निर्णय पर पहुंचने के लिए विचार। चिंतन किसी वस्तु पर अपने विचारों को केंद्रित करने पर बल देता है किंतु इसका यह अर्थ नहीं है कि किसी निष्कर्ष या निर्णय पर पहुंचना,चिंतन हृदय, मन और शरीर में पूर्ण तरह से उपस्थित होने का अभ्यास है जो आपको रचनात्मक रूप से प्रतिक्रिया करने तथा जो हो सकता है उसके लिए कार्य करने की स्वीकृति देता है अनेक लोगों के लिए चिंतन प्रार्थना या अध्ययन है।

जबकि चिंता का अर्थ है। मन का अशांत स्थिति में होना,डर,बेचैन घबराहट की क्रिया का होना।यह एक सामान्य मानवीय स्वभाव है जब कोई व्यक्ति किसी वस्तु को लेकर चिंतित होता तो उसका प्रभाव मनुष्य के शरीर,व्यवहार और स्वभाव पर भी दिखाई देता जिससे उसे हानि पहुंचती है पसीना आना,बेचैनी होना,तनाव महसूस करना,दिल की धड़कन तेज होना आदि। चिंता एक समय सीमा तक रहे तो ठीक वरना इसे मानसिक स्वास्थ्य समस्या और चिंता विकार कहा जाता हैं।

चिंता और चिंतन के बीच हमारे विचार महत्वपूर्ण हो जाते है।जब तक जीवित तब तक मन में विचार उत्पन्न होते रहेंगे। विचारों का उत्पन्न होना,मनुष्य की सजगता की निशानी है। जो मनुष्य निर्जीव या अचेत रहेगा,उसमें विचार उत्पन्न नहीं होंगे। पशु-पक्षी,जानवर बोल नहीं सकते,परंतु उसमें भी विचार चलते रहते हैं और वह अपनी अनुभूति को चेहरे और शरीर के भावों द्वारा प्रकट करते रहते है। विचार व्यक्ति के जीवन को दिशा देते हैं। उसकी कार्यशैली,व्यवहार,आचरण आदि को प्रभावित करते हैं। सकारात्मक विचार मनुष्य की सफलता में सहायक तो नकारात्मक विचार उसकी सफलता के लिए बाधक होते हैं।कुल मिलाकर हमारा पूरा मनोविज्ञान और जीवविज्ञान विचारों पर निर्भर करता है और सम्पूर्ण जीवन इसी पर ही टिका रहता है। दुनिया में किसी भी आविष्कार या नई सरंचना आरंभ विचारों से ही होती, विचारों की शक्ति असीम है चिंतन चिंता के बीच नए विचारों को जन्म देकर रास्ता बनाकर मंजिल तक पहुँचना यही दर्शाता है कि हम समस्याओं से घिरे होने के बावजूद चिंतन करने के साथ नए विचारों को जन्म देकर कार्य को पूर्ण किया। ऐसे अनेकों उदा. हमारी रोजमर्रा के जीवन मे घटित होते है जब हम एकदम चिंता में डूब जाते है जबकि उसका समाधान चिंतन करने से हमारे आसपास ही विचारों के माध्यम से निकाला जा सकता है।

विशेष

नृपेन्द्र अभिषेक नृप

लेखक-युवा साहित्यकार

युवा शक्ति को जागृत करने का संदेश देते विवेकानंद

स्वामी विवेकानंद की जयंती और राष्ट्रीय युवा दिवस हर साल 12 जनवरी को पूरे देश में बड़े उत्साह और श्रद्धा के साथ मनाया जाता है। इस दिन का महत्व केवल एक महान व्यक्तित्व के जन्मदिन के रूप में नहीं है, बल्कि यह दिन भारतीय युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत है। स्वामी विवेकानंद, जिन्होंने अपनी विद्वत्ता, आध्यात्मिकता और विश्वदृष्टि से न केवल भारत, बल्कि पूरे विश्व को प्रभावित किया, भारतीय इतिहास के ऐसे नायक थे जिनकी शिक्षाएँ आज भी अमूल्य हैं। उनके विचारों और आदर्शों को युवा पीढ़ी के साथ जोड़ने के उद्देश्य से भारत सरकार ने 1984 में उनके जन्मदिवस को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की। यह दिन युवाओं को उनकी शक्ति, जिम्मेदारियों और समाज में उनके योगदान के प्रति जागरूक करता है।

स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी 1863 को कलकत्ता में हुआ। उनका बचपन का नाम नरेंद्रनाथ दत्त था। उनके पिता विश्वनाथ दत्त एक प्रसिद्ध वकील थे और उनकी माता भुवनेश्वरी देवी धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थीं। नरेंद्र बचपन से ही असाधारण प्रतिभा और गहरी जिज्ञासा के धनी थे। उनके मन में धर्म और आध्यात्मिकता को लेकर कई प्रश्न थे, जिनका उत्तर उन्हें रामकृष्ण परमहंस के सान्निध्य में मिला। रामकृष्ण परमहंस के शिष्य बनने के बाद नरेंद्र का जीवन एक नई दिशा में अग्रसर हुआ। उन्होंने संसार को त्यागकर संन्यास लिया और स्वामी विवेकानंद के रूप में विश्वभर में भारतीय संस्कृति और धर्म का प्रचार-प्रसार किया।

स्वामी विवेकानंद का जीवन और उनके विचार भारतीय युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं। उनका मानना था कि युवा किसी भी देश की शक्ति और भविष्य का आधार होते हैं। उन्होंने भारतीय युवाओं को आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी और कर्मठ बनने की प्रेरणा दी। उनका यह कहना कि 'उठो, जागो और तब तक न रुको, जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए,' आज भी हर युवा के लिए एक प्रेरणादायक संदेश है। विवेकानंद ने शिक्षा को समाज में परिवर्तन का सबसे बड़ा माध्यम माना। उनके अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी प्राप्त करना नहीं है, बल्कि आत्मा की पूर्णता को प्रकट करना है। उन्होंने यह भी कहा कि शिक्षा वह है जो चरित्र निर्माण करे, मानसिक शक्ति को बढ़ाए और आत्मा को जागृत करे।

उनकी शिक्षाओं में धर्म और आध्यात्मिकता का विशेष स्थान था। स्वामी विवेकानंद ने धर्म को मानवता की सेवा का माध्यम बताया। उन्होंने कहा कि सच्चा धर्म वही है, जो मनुष्य को उसकी आत्मा का साक्षात्कार कराए और उसे समाज के कल्याण के लिए प्रेरित करे। उनके विचारों ने न केवल भारत, बल्कि पूरे विश्व में लोगों को प्रेरित किया। 1893 में शिकागो में आयोजित विश्व धर्म महासभा में उनका ऐतिहासिक भाषण आज भी भारतीय संस्कृति और धर्म के गौरवशाली प्रतीक के रूप में याद किया जाता है। उन्होंने अपने भाषण में भारतीय अध्यात्म, सहिष्णुता और भाईचारे के महत्व को विश्व के सामने रखा।

राष्ट्रीय युवा दिवस का उद्देश्य स्वामी विवेकानंद के इन्हीं विचारों और आदर्शों को युवाओं तक पहुँचाना है। इस दिन पूरे देश में विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जैसे युवा सम्मेलन, सांस्कृतिक आयोजन, सेमिनार और भाषण प्रतियोगिताएँ। इन आयोजनों के माध्यम से युवाओं को उनके भीतर छिपी असीम क्षमताओं का एहसास कराया जाता है और उन्हें समाज व राष्ट्र के प्रति उनकी जिम्मेदारियों के बारे में जागरूक किया जाता है।

स्वामी विवेकानंद का जीवन इस बात का उदाहरण है कि दृढ़ निश्चय और आत्मविश्वास से किसी भी कठिनाई को पार किया जा सकता है। उन्होंने यह सिखाया कि युवा केवल अपने लिए ही नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र के कल्याण के लिए भी सोचें। उनका कहना था कि 'जब तक लाखों लोग भूखे और अशिक्षित हैं, तब तक मैं उस हर व्यक्ति को गद्दार मानता हूँ, जो उनके लिए कुछ नहीं करता।'उनके इस विचार से स्पष्ट होता है कि वे केवल व्यक्तिगत उन्नति के पक्षधर नहीं थे, बल्कि समाज और राष्ट्र के समग्र विकास की बात करते थे।

आज के समय में, जब युवा पीढ़ी तकनीकी प्रगति और आधुनिकता के प्रभाव में है, स्वामी विवेकानंद के विचार और भी अधिक प्रासंगिक हो जाते हैं। उनकी शिक्षाएँ आत्मनिर्भरता, आत्मविश्वास और नैतिकता पर आधारित थीं, जो किसी भी युग में मानवता के लिए मार्गदर्शक सिद्धांत हो सकते हैं। वर्तमान समय में, जब समाज में नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है और युवा पीढ़ी मानसिक तनाव और सामाजिक चुनौतियों का सामना कर रही है, उनके विचार सकारात्मकता और संतुलन बनाए रखने में सहायक हो सकते हैं।

राष्ट्रीय युवा दिवस केवल एक आयोजन नहीं है, बल्कि यह युवाओं को स्वामी विवेकानंद के विचारों और आदर्शों को आत्मसात करने का अवसर प्रदान करता है। यह दिन हमें उनके जीवन से प्रेरणा लेकर समाज और राष्ट्र के उत्थान में योगदान देने की याद दिलाता है। उनका यह संदेश कि 'एक विचार को अपनी जिंदगी बना लो, उसे अपने सपनों में देखो, उसे अपने दिल में जियो, और अपने मस्तिष्क, मांसपेशियों, नसों, और शरीर के हर हिस्से में भर लो,' हर युवा के लिए सफलता का मूलमंत्र है।

स्वामी विवेकानंद के विचारों को अपनाकर युवा न केवल अपने जीवन को सकारात्मक दिशा में ले जा सकते हैं, बल्कि समाज और राष्ट्र को भी प्रगति के पथ पर अग्रसर कर सकते हैं। उनका जीवन इस बात का उदाहरण है कि सच्चा ज्ञान और सेवा ही मानव जीवन का उद्देश्य होना चाहिए। उनकी शिक्षाएँ हमें सिखाती हैं कि अगर हम अपने भीतर की ताकत को पहचान लें और उसे सही दिशा में लगाएँ, तो कोई भी लक्ष्य असंभव नहीं है।

इस प्रकार, स्वामी विवेकानंद की जयंती और राष्ट्रीय युवा दिवस हर युवा के लिए प्रेरणा का दिन है। यह दिन हमें उनके जीवन और विचारों से सीखने और उन्हें अपने जीवन में अपनाने का अवसर देता है। उनका यह संदेश कि 'युवा ही राष्ट्र की रीढ़ हैं,' हमें यह समझने में मदद करता है कि यदि युवा अपनी क्षमताओं को पहचानें और उनका सही उपयोग करें, तो देश का भविष्य उज्ज्वल और सशक्त होगा।

युवा दिवस पर विशेष

दुर्गेश रायकवार

लेखक जनसम्पर्क विभाग में उप संचालक हैं।

खिलाड़ी और खेल मैदानों में आगे बढ़ते युवा

मध्यप्रदेश सरकार की प्राथमिकता में युवा वर्ग सदा ही रहा है। सरकार युवाओं को खेल खिलाड़ी और मैदान के जरिए भी अग्रसर बनाने का काम कर रही है। राज्य सरकार ने खेल के माध्यम से युवाओं को सम्मान के साथ नौकरी देने का भी काम किया है।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने 18 दिसंबर 2024 को मध्यप्रदेश की खेल प्रतिभाओं का सम्मान कर खिलाड़ियों को 25.389 करोड़ की राशि वितरित की। इसके पहले 2 अक्टूबर 2024 को 18 विक्रम अवार्ड प्राप्त खिलाड़ियों को शासकीय सेवा के नियुक्ति पत्र प्रदान किये गये।

मध्यप्रदेश सरकार विभिन्न आयामों पर काम कर रही है। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के खिलाड़ियों को प्रोत्साहन के लिए आवश्यक संसाधन एवं अधोसंरचना उपलब्ध करा रही है। इसी का परिणाम है कि 2 जनवरी 2025 को मध्यप्रदेश के पैरालंपिक खिलाड़ी कपिल परमार और रुबीना फ्रांसिस को अर्जुन अवार्ड देने की घोषणा भारत सरकार ने की। दोनों खिलाड़ियों ने प्रदेश और देश का गौरव बढ़ाया है। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू द्वारा 17 जनवरी 2025 को राष्ट्रपति भवन में दोनों खिलाड़ियों को खेलों में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए राष्ट्रीय खेल पुरस्कार अर्जुन अवार्ड से सम्मानित किया जाएगा।

युवाओं को रोजगार उपलब्ध कराने के लिए सभी शासकीय विभागों में लगभग एक लाख पदों पर भर्ती की जा रही है। आगामी 5 वर्ष में ढाई लाख सरकारी नौकरियाँ उपलब्ध कराने का लक्ष्य है। पदों की भर्ती के लिये हर साल सरकारी परीक्षा कैलेण्डर जारी करने का निर्णय लिया गया है। अभी तक सरकारी नौकरियों के लिये चयनित लगभग 11 हजार अभ्यर्थियों को नियुक्ति-पत्र सौंपे गये हैं।

भारत सरकार के पीएलएफ सर्वे में मध्यप्रदेश ने सबसे कम बेरोजगारी दर दर्ज की है। स्टार्ट-अप को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय आयोजनों में सहभागिता के लिये 50 हजार से लेकर डेढ़ लाख रुपये तक की वित्तीय सहायता प्रदान की जा रही है। राज्य स्तरीय रोजगार दिवस के अवसर पर रिकॉर्ड 7 लाख युवाओं को 5 हजार करोड़ का स्व-रोजगार ऋण वितरित किया गया। मुख्यमंत्री सीखो-कमाओ योजना के तहत वर्ष 2024 में लगभग 20 हजार चयनितों को करीब 41 करोड़ रुपये स्टायपेंड वितरित किया गया। प्रदेश में 600 से अधिक रोजगार मेले हुए, इसमें 61 हजार से ज्यादा आवेदकों को निजी क्षेत्र में नियुक्ति-पत्र प्रदाय किये गये। प्रतियोगी परीक्षाओं के शुल्क का भुगतान भी राज्य सरकार द्वारा किये जाने का निर्णय लिया गया है।

राज्य सरकार ने हर विकासखण्ड में स्पोर्ट्स कॉम्पलेक्स निर्माण का निर्णय लिया। भोपाल में 985 करोड़ रुपये से अंतर्राष्ट्रीय स्पोर्ट्स कॉम्पलेक्स का निर्माण प्रगतिरत है। वर्तमान में 111 स्टेडियम/खेल प्रशिक्षण केन्द्र निर्मित हैं, जबकि 56 खेल स्टेडियम/प्रशिक्षण केन्द्र निर्माणाधीन हैं। सरकार ने खेल को शिक्षा से जोड़ते हुए सतना में स्पोर्ट्स कॉलेज और सिंथेटिक ट्रेक बनाने का निर्णय लिया है। साथ ही वन डिस्ट्रिक्ट-वन स्पोर्ट्स कॉम्पलेक्स के अंतर्गत प्रदेश के सभी जिलों में खेल स्टेडियम बनाने का निर्णय भी राज्य शासन द्वारा लिया गया है। यही नहीं पुलिस में स्पोर्ट्स कोटा निर्धारित कर प्रतिवर्ष 10 सब इंस्पेक्टर एवं 50 कांस्टेबल को नियुक्ति देने का कार्य भी किया जा रहा है।

प्रदेश के शासकीय महाविद्यालयों में कृषि विषय एवं विश्वविद्यालयों में पायलेट ट्रेनिंग कोर्स शुरू होगा। उज्जैन के इंजीनियरिंग कॉलेज में आईआईटी का सेटेलाइट कैम्पस शुरू किया जा रहा है। भोपाल, ग्वालियर, जबलपुर, इंदौर, उज्जैन और रीवा के 6 विश्वविद्यालयों में इन्क्यूबेशन केन्द्रों की स्थापना का निर्णय भी राज्य सरकार द्वारा लिया गया है। कौशल विकास एवं एमर्जिंग ट्रेड्स के दृष्टिगत एआई, मशीन लर्निंग, कोडिंग आधारित शिक्षा उपलब्ध करायी जायेगी। वर्तमान में कुल 268 शासकीय आईटीआई संचालित हैं। इस वर्ष 22 नये आईटीआई प्रारंभ करने का निर्णय लिया गया है। इसी के साथ 5280 अतिरिक्त सीट की वृद्धि होगी। देवास, छिंदवाड़ा एवं धार को ग्रीन स्किलिंग आईटीआई में विकसित कर सोलर टेक्नीशियन एवं इलेक्ट्रिक व्हीकल, मैकेनिक पाठ्यक्रम प्रारंभ करने का भी निर्णय लिया गया है।

राज्य सरकार का उद्देश्य खेल एवं युवा कल्याण विभाग द्वारा खेल अकादमी के माध्यम से चिन्हित, प्रतिभावान खिलाड़ियों को अंतर्राष्ट्रीय स्तर का खेल प्रशिक्षण उपलब्ध कराया जाना है। प्रदेश में अब तक 18 खेलों की 11 अकादमियाँ स्थापित की गयी हैं। खेल अधोसंरचना निर्माण/विकास तथा उपलब्ध अधोसंरचना के संचालन एवं संधारण में अब तक विभिन्न 4 श्रेणियों के 107 खेल अधोसंरचना परिसर तैयार हैं। राज्य सरकार द्वारा परफार्मेंस, स्पोर्ट्स एवं कम्युनिटी स्पोर्ट्स पर भी कार्य किया जा रहा है। मध्यप्रदेश के खिलाड़ी शूटिंग, घुड़सवारी, हॉकी एवं वॉटर स्पोर्ट्स में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहे हैं। इन खेलों के खिलाड़ियों को अंतर्राष्ट्रीय एक्सपोजर दिया जायेगा। खेलों की मूलभूत सुविधा युवाओं को अपने आसपास ही उपलब्ध हो, इसके लिये कम्युनिटी स्पोर्ट्स को बढ़ावा दिये जाने का काम किया जा रहा है। वर्तमान में खिलाड़ियों के प्रदर्शन में स्पोर्ट्स साइंस एवं फिटनेस का महत्वपूर्ण योगदान है। प्रदेश में स्पोर्ट्स साइंस को बढ़ावा दिया जा रहा है। नाथू बरखेड़ा भोपाल में अंतर्राष्ट्रीय स्तर के स्पोर्ट्स साइंस सेंटर की स्थापना भी की जा रही है। शासन के सीमित वित्तीय संसाधनों को दृष्टिगत रखते हुए खेल अधोसंरचना का निर्माण एवं उपलब्ध खेल अधोसंरचना को पीपीपी मॉडल से किया जा रहा है।

नवाचार की दिशा में प्रत्येक जिले में कोई न कोई खेल लोकप्रिय होता है। उस खेल को केन्द्रित कर सभी आवश्यक संसाधन संबंधित जिले में उपलब्ध कराने पर भी काम किया जा रहा है। युवाओं को फिटनेस के प्रति जागरूक करने के लिये प्रत्येक विधानसभा में आउटडोर जिम स्थापित करने की भी योजना है। प्रत्येक जिले में स्कूल चिन्हित कर वहाँ स्पोर्ट्स के आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराये जायेंगे। प्रत्येक खेल अधोसंरचना के उपयोग के लिये 'पे एण्ड प्ले' योजना का क्रियान्वयन सहकारिता विभाग के तहत खेल समितियों का गठन कर किया जायेगा। प्रशिक्षकों को प्रशिक्षित करने तथा प्रशिक्षण स्किल को अद्यतन करने के लिये डेव्हलपमेंट प्रोग्राम संचालित किया जायेगा। युवाओं की अभिरुचि को दृष्टिगत रखते हुए ई-स्पोर्ट्स अकादमी स्थापित करने का भी लक्ष्य है। युवाओं को विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से जोड़कर उन्हें सशक्त और मजबूत बनाने के उद्देश्य से साल भर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं, जिससे उनके बौद्धिक एवं शारीरिक स्तर में वृद्धि हो सके।

मौला... मेरे मौला (ना)!

प्रकाश पुरोहित

मैं उन दिनों साइकल ही 'बाइक' हुआ करती थी तो शहर में कदम सा'ब की बग्घी ही थी । आसपास पचास-साठ किलोमीटर साइकल से निपटाना, 'दायें पैर का खेल' होता था। उज्जैन से इंदौर तो सिनेमा देखने ही चले आते थे, यह अलग बात है कि तब एक दिन में दो शो तो देखते ही थे, जिसके चर्चे हम दोस्त, तब तक करते रहते थे, जब तक कि ये फिल्में उज्जैन में लग नहीं जाती थीं और बाद में भी इस तरह भुनाया करते थे कि 'हम तो पहले ही इंदौर जाकर देख आए थे।' रात बारह बजे भी साइकल से उज्जैन लौटना 'भयावह' नहीं लगता था कि गाने गाते, चांदनी पीते चले जाते थे। हम चार दोस्तों का यह कारवां तीन साइकलों पर चलता था, यानी कोई एक डबल बैठता था। बारी-बारी से चलाते, 'बिन सहकार, नहीं उद्धार' सार्थक करते चलते

थे!

गणेश अनंत चौदस की झांकी पहले उज्जैन में निपटाई जाती, फिर साइकल से इंदौर की ओर रुख करते। तब उज्जैन की झांकियां जल्दी निकाल दी जाती थीं कि इंदौर जाकर देखने वाले, पहले यहां की देख लें। झांकी तो रात में और फिर सुबह से सिनेमा का सिलसिला चल पड़ता। सुना था कि विदेशों में हर समय फिल्म चलती रहती है, कभी भी जाकर बैठ जाइए (वैसे गलत सुना था!)। झांकी वाली रात नई फिल्म जरूर रिलीज होती थी और फिर रुकने का नाम नहीं लेती थी, दिन-रात शो चलते थे तो सुबह छह बजे से देखना शुरू करते तो शाम तक। जैसे लूट मची रहती थी कि आज नहीं तो फिर कभी नहीं। चूंकि साइकल साथ होती थी तो किसी बस-रेल का इंतजार नहीं करना होता था, जब मन भर जाए यानी जेब खाली हो जाए, घर की याद आने लगती थी।

हम तीन दोस्त शहरी थे और एक बाहरगाम से पढ़ने आया था... बलराम! उसकी खेती थी अपने गांव में। उसका इसरार रहता था कि कभी हमारे गांव भी तो चलें, साइकलों से। यही मौसम रहा होगा। गन्ने का रस, गुड़ का चरखी और राब, ये ऐसे स्वाद थे कि हम चल पड़े साइकलों पर। बलराम का गांव, बड़नगर के करीब था यानी उज्जैन से कोई एक-डेढ़ घंटे का रास्ता। साइकल पर यह कारवां, मस्ती करते हुए गो-धूलि बेला में गांव पहुंचा। खूब धूमधाम हुई और देर रात खाते-पीते सो गए।

अगली सुबह, जागते हुए गांव को देखने का मौका मिला। पहली बार उस गांव का लिखा हुआ नाम देखा 'मौलाना।' नाम पढ़ कर ही मजा आ गया कि ये भी किसी गांव का नाम हो सकता है! यह नाम लेते हुए गुदगुदी-सी हुई, जैसे पहली बार 'सारंगी' और 'तराना' नाम सुन कर हुई थी। तब दिलीप कुमार की फिल्म 'तराना' आई थी और हम इस गांव से ही उस फिल्म को जोड़ कर देखते-सोचते थे। तब यह विचार तो नहीं आता था कि कैसे नाम रखे जाते हैं, लेकिन नाम से जैसे अपनापन टपकता था। तब तक शायद मौलाना का मतलब भी पता नहीं था (कितना अच्छा था ना!), लेकिन बोलना, पढ़ना और सुनना अच्छा लगता था। छोटे से गांव का इस नाम के साथ जैसे कद बढ़ गया था, क्योंकि मौलाना तो हमारी नजर में 'आदरणीय' हुआ करते थे। जैसे गुरुजी (इस नाम का कोई गांव होगा, मुझे नहीं लगता है)!

मौलाना की मिट्टी में ना जाने क्या था कि गन्ना और आलू थोक में पैदा होते थे। तब बलराम के मुंह से ही सुनते थे कि आलू के बीज लेने शिमला जा रहे हैं बड़े भाईसाहब। तब लगता था कि खेती में भी हिल-स्टेशन घूमने के उजले अवसर हैं। शिमला तो हमारे लिए तब स्विट्जरलैंड की तरह होता था। मौलाना छोटा-सा गांव था और लोगों के बड़े -बड़े दिल थे। कहने को एक घर के मेहमान थे, लेकिन लगता था, जैसे सभी के यहां आए हैं। किसी चीज के लिए इनकार नहीं और किसी तरह का परहेज नहीं। लगता था गुड़ तो चरखियों पर बन रहा होगा, लेकिन मिठास यहां की हवा में घुली है।

दो रोज ही रहे थे मौलाना में, लेकिन हमेशा के लिए जैसे अंदर तक सर्दी की खांसी जैसा जम गया था। जब-तब हुड़स उठती रहती थी और मौलाना जाने का कोई मौका छोड़ा हो, उन दिनों, याद नहीं। बाद में भी रतलाम आते-जाते सड़क किनारे खड़े बोर्ड पर 'मौलाना' लिखा देखता तो उतर जाने का मन होता। उतरा भी हूं, कुछेक बार।

तभी एक बार, रतलाम से आते हुए सड़क के एक तरफ वही बोर्ड 'मौलाना' नजर आया और तभी दूसरी तरफ नजर गई तो एक और नया-नया बोर्ड लग गया था। घबरा कर नजर दूसरी तरफ फेर ली थी कि मुझे वही नाम अपना-सा लगता था। तब भी सरकारी बोर्ड पर 'मौलाना' ही लिखा था और दूसरा बोर्ड शायद कुछ नाराज लोगों ने लगा दिया होगा। यह बाबरी मस्जिद के बाद का वाकया है। उसके बाद उधर से जाने में भी कतराने लगा था कि कहीं उस दूसरे नाम पर नजर ना पड़ जाए। मैं अपनी यादों का छोटा-सा खूबसूरत और सहज, सरल नाम दिल में बसाए रखना चाहता था। लगता था सब ठीक हो जाएगा और...!

ये बातें आज इसलिए फिर से इसलिए याद आ रही हैं कि पिछले हफ्ते ही मेरी यादों के 'मौलाना' का नाम सरकार ने बदलने का ऐलान किया है। बताया गया कि मौलाना बोलने में दिक्कत होती थी और लोगों की मांग थी, इसलिए मुख्यमंत्री ने यह अहम फैसला लिया है। यहां के लोगों ने तो पहले से ही इसे विक्रमपुर (बताइए कौन-सा नाम आसान है!) लिख दिया था सड़क किनारे के बोर्ड पर, लेकिन सरकार अगर पूरी मांग मान ले तो काहे की सरकार। अब विक्रमपुर नहीं, विक्रम नगर हो जाएगा मौलाना। वैसे कुछ और भी होता तो उज्र नहीं, बस, 'मौलाना' नहीं चाहिए!

जब वहां के पुराने बाशिंदे से बात की तो उसका कहना था 'जब एक भी मुस्लिम परिवार यहां नहीं है तो फिर मौलाना नाम रखने का क्या मतलब!' अब यह तो पूछने से रहा कि फिर यह मौलाना नाम कहां से आया या कोई भी मुस्लिम परिवार यहां क्यों नहीं है, कब से नहीं है या कभी थे भी या नहीं! और यदि थे तो फिर चले कहां गए... और क्यों? जानता हूं, इन दिनों किसी दोस्त से भी आप ऐसे बेहूदे सवाल नहीं कर सकते हैं, लेकिन मेरी यादों में तो 'मौलाना 'ही बसा रहेगा, फिर चाहे कोई-सा भी नगर हो या पुर हो जाए!

क्या कह रही है जिंदगी

ममता तिवारी

लेखक साहित्यकार हैं।

अपनी ही भाषा ना जानना, ना बोलना बुरी बात

10 जनवरी को हिंदी दिवस मनाया गया। आप सोच रहे होंगे ये कौन सा हिंदी दिवस आ गया दरअसल 14 सितंबर को हम राष्ट्रीय हिंदी दिवस मनाते हैं और 10 जनवरी को हम विश्व हिंदी दिवस मनाते हैं। आप कहेंगे भारत में तो कोई हिंदी बोलना भी नहीं चाहता और आप विदेश की बात कर रही हैं। हिंदी हमारी राज भाषा है (ऑफिसों, कार्यालयों में काम करने वाली भाषा) हिंदी हमारी राष्ट्र भाषा नहीं है, होनी चाहिये। वो कहते हैं हमारे यहां बहुभाषी लोग हैं, हुआ करें, पर हिंदी तो सबको आनी चाहिये। कोई भी भाषा जहाँ भी जाती है हमारे संस्कार, हमारी संस्कृति विचार परंपरायें फैलाती है। आज विश्व में लोग योग पर मुग्ध हैं, हमारा क्लासिकल संगीत विदेशी सीख रहे हैं, हिंदी में गा रहे हैं (हम जिसे भूले जा रहे हैं) लेकिन हम शर्मिंदा होते हैं हमें अंग्रेजी नहीं आती। यूएस में एक कवि बैठे लिख रहे थे पहाड़ियों में, मेरी बहू ने कहा, ओह यू आर पोएट, माय मदर ऑलसो ए पोएट। मैंने कहा हैलो सर आयम ममता तिवारी और हाथ बढ़ाया। उन्होंने हाथ जोड़े 'नमस्ते'। उन्होंने कहा कि मैं संस्कृत पढ़ने साउथ इंडिया रहा पाँच साल। आप मीरा की तरह लिखती हो 'हे री मैं तो प्रेम दीवानी'। पराये देश में एक हमजुबाँ मिला, मैं शर्मिंदा और गौरवान्वित एक साथ हुई।

चलिये पहले विश्व हिंदी दिवस का इतिहास जाने। पहली बार तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने सन् 1975 में नागपुर में विश्व हिंदी दिवस मनाया। इसमें 30 देशों के 122 प्रतिनिधि शामिल हुये थे। इसके बाद साल 2006 में तात्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने औपचारिक रूप से विश्व हिंदी दिवस मनाने की घोषणा की। 1949 में संयुक्त राष्ट्र महासभा में पहली बार हिंदी बोली गई थी। दुनिया भर में लगभग 600 मिलियन वक्ताओं के साथ, हिंदी मंदारिन चीनी अंग्रेजी के बाद तीसरी सबसे अधिक बोले जाने वाली भाषा है। विश्व के 132 देशों में जा बसे भारतीय मूल के लगभग 2 करोड़ लोग हिंदी माध्यम से ही अपना कार्य निष्पादित करते हैं। हिंदी एशिया

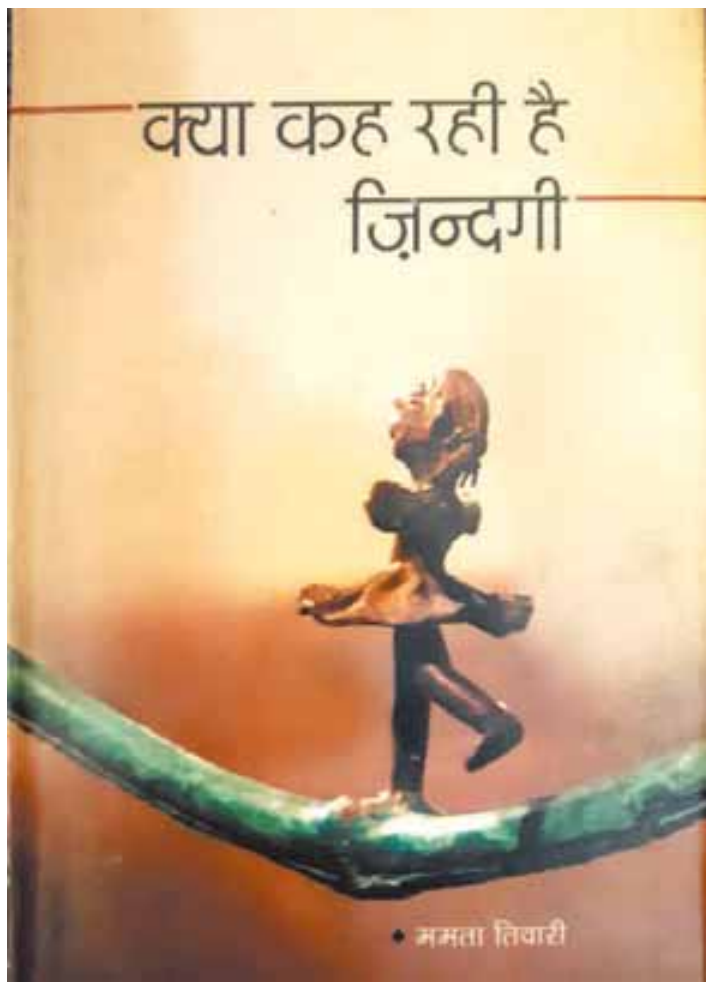

की प्रतिनिधि भाषा है।

बहुत ही अच्छी अंग्रेजी की जानकारी रखने वाले मेरे एक मित्र थे। उन्होंने होटल के रिसेप्शन पर बैठी लड़की को जोर से डाँटा था आपको हिंदी नहीं आती क्या? उसने कहा आती है। उन्होंने कहा कि जब मैं आपसे हिंदी में बात कर रहा हूँ तो आप अंग्रेजी में क्यों बात कर रही हैं? फिर मेरी तरफ मुड़े और कहा 'तुम हिंदी की लेखिका हो अपनी भाषा खिचड़ी मत करना, जहां जाओ हिंदी में बात करना।' और ये बात मैंने गांठ बांध ली। सच में मैंने अमेरिका यात्रा में देखा कि चीनी, जापानी, जर्मन को अंग्रेजी नहीं आती थी। वे ग्रुप में थे अपने हाव भाव से बात समझाने की कोशिश कर रहे थे या उनका ग्रुप लीडर ट्रांसलेट कर रहा था। हम बड़े गौरवान्वित थे कि हमें अंग्रेजी आती थी। खैर, भाषा जानना बुरी बात नहीं। पर अपनी ही भाषा ना जानना, ना बोलना बुरी बात है।

विश्व हिंदी दिवस मनाने का उद्देश्य क्या है? वैश्विक स्तर पर इसे एक अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में पेश करना है पर क्यों? ताकि हमारी पुरानी, कला, साहित्य, संस्कृति, संगीत विश्व में पहुँचे। उन्हीं परिचित ने मुझे टोका था तुम लोग भई 'योगा' क्यों बोलते हो? योगा तो गैर हिंदी भाषी के लिए है जो 'आ' की मात्रा लगाते हैं उनके लिये है। हमें तो 'योग' बोलना चाहिये। मैं फिर शर्मिंदा हुई थी।

तथ्य यह है कि भारत, नेपाल, दक्षिणी अफ्रीका, पाकिस्तान व बांग्लादेश में शुद्ध हिंदी बोली जाती है। इसके अलावा भूटान, श्रीलंका, मालद्वीप, इंडोनेशिया, सिंगापुर, थाईलैंड, चीन, जापान, ब्रिटेन, जर्मनी, न्यूजीलैंड, मॉरीशस, यमन, युगांडा, कनाडा में भी हिंदी भाषी लोग हैं।

ग्यारहवें विश्व हिंदी सम्मेलन में मैं जब मॉरीशस गई तक अधिकांश औरतें साड़ी में थी। 1834 से 1920 तक भारतीय गिरमिटिया मजदूर भारत से मॉरीशस लाये गये। आज वहाँ हिंदू धर्म मुख्य है 52 प्रतिशत लोग हिंदू हैं। वहाँ हिंदी, तमिल, भोजपुरी, मराठी, गुजराती भी बोली जाती है बाकी लोग क्रियोल बोलते हैं। मॉरीशस में तीन बार विश्व हिंदी सम्मेलन हो चुका है। 13 वां विश्व हिंदी सम्मेलन बाली (इंडोनेशिया) में हुआ। विश्व हिंदी सचिवालय मॉरीशस में स्थित है। 14 वां विश्व हिंदी सम्मेलन 2023 फिजी में हुआ था। तीन वर्ष के अंतराल से ये मनाया जाता है। आक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरीमें हिंदी के छह लाख शब्द और 37 लाख कोटेशंस शामिल किये गये हैं। जैसे चना, भेलपूरी, अरे यार, चावल, छी छी, चुप, बिंदी, दीदी, अब्बा, गुलाब जामुन, फंडा, जय, झुग्गी, नाटक, हाट, गली, चमचा, मिर्च, डब्बा, हड़ताल वगैरह वगैरह। अच्छा हमारे कुछ शब्द ऐसे हैं जिनसे अंग्रेजी के शब्द बने जैसे

चंपी - शैंपू
चटनी - चटनी
बंगला - बंगलो
अवतार - अवतार
बांगड़ी - बैंगल्स
मंत्र - मंत्र
निर्वाण - निर्वाण

ओबामा से लेकर ट्रंप समेत कई ग्लोबल लीडर्स को हिंदी बोलनी पड़ी है। आप ये तो जानते ही होंगे कि संस्कृत की कोख से ही हिंदी का जन्म हुआ है। कितना कुछ है हिंदी पर बात करने को। दुआ मांगती हूं, विदेशों की तरह हमारे देश में हिंदी भाषा का चलन बढ़े ताकि हर प्रांत का व्यक्ति रोज सुबह सवेरे एक दूसरे से पूछ सके हिंदी में और क्या कह रही है ज़िंदगी?

जहां अब शांति...शांति है!

डेनमार्क उन चार-पांच देशों में है, जो सबसे सुखी और कम तनाव वाले हैं। हर डेनिश निवासी के पास सीपीआर (सेंट्रल पर्सन रजिस्टर) नंबर होता है, जो उनकी जन्मतिथि और चार और अंकों से बना होता है, जिसका इस्तेमाल बैंकिंग, टैक्स, सेहत और पुस्तकालय से किताबें लेने तक के लिए किया जाता है। डेनिश कल्याण सेवाएं आसान हैं,

❐ यूके से प्रज्ञा मिश्रा

क्योंकि 1924 के बाद से परिषदों को आबादी रजिस्टर रखने के लिए कानून ने मजबूर किया। यह कानून देश के इतिहास में भीषण हत्याओं की खबर के बाद लागू किया था। ऐसा होने से पहले डैगमार ओवरबाय (33) को नौ बच्चों की हत्या करने का दोषी पाया गया था (और सत्रह हत्या का संदेह भी था), उनमें से ज्यादातर बच्चों के लापता होने का रिकॉर्ड नहीं था।

मैग्नस वॉन हॉर्न की फिल्म 'द गर्ल विद द नीडल', उस महिला की भयानक हरकतों पर है, जिसे 'एंजेल मेकर' कहा गया। इस साल के ऑस्कर के लिए डेनमार्क में इस फिल्म को आगे रखा है। फिल्म काली और सफेद है। फैक्टरी कर्मचारी कैरोलीन (विक कारमेन सोने) पहले विश्व युद्ध के बाद कोपेनहेगन में रहती है, जहां चादर गंदी हैं और छत टपकती हैं। लोग जंग लगी बाल्टियों में पेशाब करते हैं और ढलान पर रहते हैं। ओवरबाय का काम अखबारी-पर्चों के विज्ञापनों से हताश माताओं की तलाश करना, एकमुश्त भुगतान के लिए उनके बच्चों को गोद लेने के लिए सहमत होना और उसी दिन उन्हें मार देना था। इसके उलट केस के दौरान देखने वालों को उत्तेजित करने और उन्हें दोषी ठहराने की इजाजत दी गई है।

फिल्म डायरेक्टर वॉन हॉर्न बताते हैं- 'डैगमार ओवरबाय सिर्फ पागल सीरियल किलर है तो यह कहना आसान है कि उसने जो किया बुरा था।' जब उसके आसपास के समाज को देखना शुरू करते हैं, जिस समय में वह रहती थी। यह गोथम शहर की तरह है। कभी-कभी हमें अपने समाज के बारे में सच्चाई बताने के लिए किसी और की जरूरत होती है।

जुगलबंदी

समीर लाल 'समीर'

लेखक कनाडा निवासी प्रख्यात ब्लॉगर और व्यंग्यकार हैं।

ज्ञान आज भी उसी पान की दुकान से बंट रहा है

बरसों पहले जब तिवारी जी से पान की दुकान पर नई नई मुलाकात हुई थी। तब तिवारी जी कुछ लोगों को मोहल्ले के बिगड़ते हालातों और नई पीढ़ी के संस्कारों पर उन हालातों के दुष्प्रभाव पर ज्ञान दे रहे थे। घंसू उनके ज्ञान से इतना प्रभावित हुआ कि वो उनको गुरुजी बुलाने लगा। घंसू जब गुरुजी से पूछता कि उन्होंने इतना ज्ञान कहाँ से प्राप्त किया? तब वो मुस्कराते हुए बताया करते कि वो कभी किसी स्कूल नहीं गए। जो कुछ सीखा, इस जीवन से ही सीखा। हर ठोकर से वो सबक लिया करते हैं। ज्ञान प्राप्ति के लिए जीवन की पाठशाला से बेहतर कुछ नहीं-बस आपके अंदर सीखने की जिज्ञासा होना चाहिए। तब जाकर घंसू को समझ आया कि जीवन तो उसने भी जिया है लेकिन शायद जिज्ञासा की कमी रह गई होगी।

ज्ञान का तो ऐसा है कि जितना बांटो उतना बढ़ता है और फिर तिवारी जी को तो सारा समय ज्ञान बांटने के सिवाय और कुछ काम ही नहीं था। ज्ञान बढ़ता रहा और घँसू की भक्ति भी। अब तिवारी जी की नजर मोहल्ले से आगे बढ़कर शहर की समस्याओं पर थी और उसके शहर भर के युवाओं पर हो रहे दुष्प्रभावों पर। दायरा बढ़ा तो घँसू अब उनको मास्साब पुकारने लगे और न जाने कब यह किस्सा सुनाई देने लग गया कि तिवारी जी उस जमाने के पाँचवीं पास हैं। तब यहीं चौक के पास का वो जर्जर भवन जिसमें आजकल आवारा पशु बैठे रहते हैं वो 5 वीं तक का एक स्कूल हुआ करता था। अब न तो वो स्कूल है और न उस स्कूल के कोई रिकार्ड। अब मास्साब ज्ञान बाँट रहे थे और जितना बाँट रहे थे उसी गति से वो बढ़ रहा था।

बढ़ते बढ़ते कुछ ही दिन में चर्चा प्रदेश स्तरीय समस्याओं तक जा पहुंची। मास्साब याने तिवारी जी का अपना स्टाइल भी थोड़ा बदला। अब वे कहा करते कि मुख्यमंत्री अगर हमारी मानें तो हम तो वो स्कीम बताएं कि अपना प्रदेश पूरे देश में सबसे आगे हो और यहाँ का युवा पूरे देश में अपने ज्ञान का डंका बजाए। मगर मुख्यमंत्री को उदघाटन और झण्डा वादन से फुरसत मिले, तब न!! मत सुनो हमारी, हमें क्या। हमारा क्या

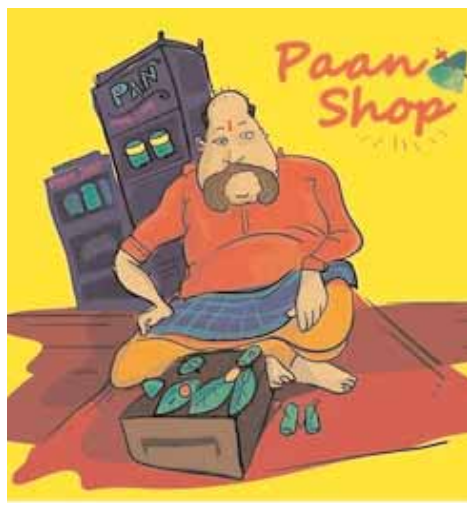

बिगड़ेगा। तुम्हारे प्रदेश के युवा ही बिगड़ेंगे।

तिवारी जी की तारीफ इस बात पर जरूर करना होगी कि उनके चिंतन का मुख्य बिन्दु युवा ही होते हैं। उनका यह मानना है कि आज का युवा कल का राष्ट्र निर्माता है। हालांकि वो स्वयं भी और साथ ही उनके ज्ञान सुनते दिन दिन भर पान की दुकान पर बैठे खाली लोग जिनमें घँसू भी शामिल था, कल के युवा थे जिन्हें आज राष्ट्र निर्माण में जुटे होना चाहिए था मगर अपनी कमीज के दाग भला कौन देखता है। ये वैसे ही बाबा हैं जो लोगों को माया से मुक्त होने का प्रवचन दे देकर खुद माया से युक्त होकर अपना खजाना भर रहे हैं। प्रदेश स्तरीय ज्ञान ने मास्साब को मास्साब से कब आचार्य बना दिया, यह तो घँसू ही जाने, मगर इधर कुछ समय से वह उनको आचार्य जी कह कर संबोधित करता था। वो पुराने 5 वीं वाले स्कूल की कहानी भी थोड़ा सा बदली कि वो 8 वीं क्लास तक हुआ करता था और जब तिवारी जी ने वहाँ से 8 वीं पास की उसके बाद से स्कूल बंद हो गया और तब से ही आवारा पशु उसमें आराम फरमाते हैं। जब चौराहे पर बैठ कर सिर्फ ज्ञान ही बांटना है तो 5 वीं क्या और 8 वीं क्या? कोई सरकारी नौकरी तो है नहीं कि कोई दस्तावेज मांगे।

घँसू की भक्ति और ज्ञान का विस्तार तीव्रता से हो रहा था। मोहल्ले से शुरू हुई सलाह अब राष्ट्र स्तर की ओर मुड़ रही थी। अब आचार्य जी की चर्चाओ में मुख्यमंत्री का स्थान प्रधानमंत्री ग्रहण कर चुके थे और प्रदेश के युवाओं का स्थान देश के युवाओं ने ले लिया था। अगर अब प्रधानमंत्री आचार्य जी की सलाह मानें तो देश के युवा विश्व स्तर पर डंका बजाने को तैयार खड़े थे। मगर तब मुख्यमंत्री ने न सुनी और अब प्रधानमंत्री नहीं सुन रहे थे। उनको तो सालों साल उदघाटन और हरी झंडी के साथ साथ लगातार कपड़े बदल बदल कर चुनावी रैली भी करनी होती है तो भला आचार्य जी के सलाह के लिए कब समय मिलता? आचार्य जी का अब भी वो ही सुर- मत सुनो, हमारा क्या बिगड़ेगा? तुम्हारे देश के युवा ही बिगड़ेंगे।

घँसू अब उनको प्रधानाचार्य बुलाता। पता चला कि वे 12वीं पास हैं। स्कूल भी वही लेकिन अब वो 12 वीं तक होकर बंद हुआ और तब से आवारा पशुओं का आरामगाह बना।

पता नहीं मुझे अब ऐसा लग रहा है कि निकट भविष्य में प्रधानाचार्य जी विश्व स्तर की चर्चा करेंगे और घँसू उनको प्रमोट कर विश्व गुरु पुकारेगा। तब शायद ये बीए तक पढे हो जाएं किसी विश्वविद्यालय से। प्रभाव तो बढ़ ही रहा है कोई मांगेगा तो डिग्री भी दिखा देंगे दूर से।

सब बदला मगर ज्ञान आज भी उसी पान की दुकान से बंट रहा है और सतत वहीं से बंटता रहेगा।

'केबीसी' से क्यों नाराज हुए अमिताभ

सोनी चैनल का %केबीसी% को लेकर अमिताभ बच्चन के साथ 100 एपिसोड का करार हुआ था। ये एपिसोड पूरे हो चुके। अब इसे 50 एपिसोड आगे बढ़ाने की बात हुई। इसमें भी 10 से ज्यादा एपिसोड अमिताभ ने पूरे कर लिए। लेकिन, बाकी के 40 एपिसोड पर जंग छिड़ गई। अभी ये तय नहीं है कि अमिताभ आगे के एपिसोड की शूटिंग करेंगे या नहीं! यदि अमिताभ शूटिंग करने नहीं आए तो कोई नहीं जानता कि %केबीसी% आगे जारी रहेगा या नहीं!

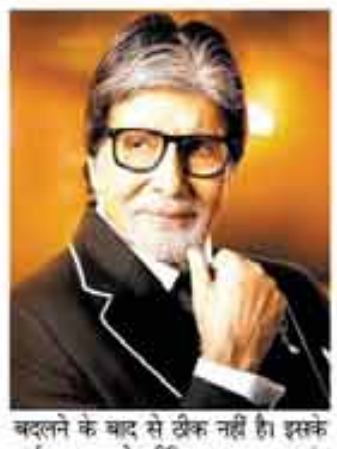

सोनी चैनल पर कई दिनों से बदलाव आता दिखाई दे रहा है। कई चलते सीरियलों को बंद करके उनकी जगह पुराने सीरियलों का पुनप्रसारण किया जा रहा है। रामायण और बड़े अच्छे लगते हैं प्राइम टाइम पर फिर से दिखाए जाने लगे। 6 साल पहले अकारण बंद कर दिए गए क्राइम सीरियल सीआईडी का नया सीजन शुरू हो गया और इसने आते ही अपना असर भी दिखा दिया। इसकी टीआरपी ने धमाल कर दिया। नए सीजन में कौन बनेगा करोड़पति से ज्यादा टीआरपी लाकर सीआईडी ने नई कहानी रच दी।

ऐसे में अब अमिताभ बच्चन की एंकरिंग वाले केबीसी का क्या होगा, ये कोई नहीं जानता और न सोनी चैनल के पास इसका कोई जवाब है। बताते हैं कि बीच में एक दिन अमिताभ शूटिंग करने भी नहीं आए। ऐसे में चैनल के सामने संकट हो गया कि यदि आगे भी अमिताभ नहीं आए, तो सोमवार को क्या होगा! दरअसल, सोनी का माहौल इसका चीफ बदलने के बाद से ठीक नहीं है। इसके कई नए चलते सीरियल अचानक बंद कर दिए गए। क्योंकि, इनकी टीआरपी अच्छी नहीं आ रही थी।

अमिताभ बच्चन के नाम का फायदा उठाकर चैनल ने जमकर कमाई की। अमिताभ बच्चन ने कई अनजान से उत्पादों का विज्ञापन करके चैनल की मदद भी की। लेकिन, बताते हैं कि अब उसी में पंगेबाजी शुरू हो गई। पिछले साल ही साउथ के कई सितारों की मौजूदगी में शूट होने वाले कौन बनेगा करोड़पति के एक ज्वेलरी स्पेशल एपिसोड की शूटिंग अमिताभ बच्चन ने इसलिए ऐन मौके पर रद्द कर दी थी, क्योंकि इसके लिए उन्हें पहले से नहीं बताया गया था। इस बार भी मामला उलझता जा रहा है।

जानकारी के मुताबिक इस सीजन के लिए अमिताभ बच्चन के साथ 100 एपिसोड का जो करार हुआ था, वे ये एपिसोड पूरे कर चुके हैं। 50 एपिसोड बढ़ाने की बात हुई और इसमें भी 10 से ज्यादा एपिसोड अमिताभ ने पूरे भी कर लिए। लेकिन, बाकी के 40 एपिसोड पर अभी घमासान हो रहा है। अभी ये तय नहीं है कि अमिताभ आगे के एपिसोड की शूटिंग करेंगे या नहीं! इतना जरूर कहा गया कि तबियत ठीक नहीं होने से शूटिंग में अड़चन आ रही है। यदि ऐसा ही रहा, तो क्या केबीसी के आगे के एपिसोड नहीं बनेंगे और ऐसी स्थिति में क्या होगा, इसका जवाब कोई नहीं दे रहा।

'स्काई फोर्स' के गाने में मनोज मुंतशिर का नाम नहीं

इस साल के पहले महीने में रिलीज होने वाली फिल्मों में अक्षय कुमार और वीर पहाड़िया की फिल्म %स्काई फोर्स% भी है। लेकिन, रिलीज से पहले ही फिल्म पर विवादों कुहासा छाने लगा। गीतकार और स्क्रीन राइटर मनोज मुंतशिर ने फिल्म मेकर्स पर उन्हें गाने में क्रेडिट नहीं देने को लेकर नाराजगी जताई। उन्होंने %एक्स% पर पोस्ट करके फिल्म के निर्माता, जियो स्टूडियो, दिनेश विजान की मैडॉक फिल्म्स सारेगामा ग्लोबल को कानूनी कार्रवाई करने की चेतावनी दी।

जियो स्टूडियो ने 7 जनवरी को एक्स पर फिल्म के एक गाने का टीजर शेयर किया, जिसे बी-प्राक ने गाया है। तनिष्क बागची ने उसमें म्यूजिक दिया। इसमें उन दोनों को क्रेडिट तो दिया, लेकिन मनोज मुंतशिर का इसमें कोई जिक्र नहीं किया गया। हालांकि इस पोस्ट के कैप्शन में उन्हें टैग जरूर किया है। इसी वजह से ये पूरा बखेड़ा खड़ा हो गया। इससे नाराज मनोज मुंतशिर ने गुस्से में पोस्ट कर कानूनी कार्रवाई करने की धमकी दे डाली।

मनोज मुंतशिर ने अपने पोस्ट में लिखा प्लीज इस बात पर ध्यान दीजिए, इसे किसी ऐसे व्यक्ति ने लिखा है, जिसने इसके लिए अपना सारा खून-पसीना बहा दिया। शुरुआती क्रेडिट से राइटर का नाम हटाना मेकर्स की तरफ से आर्टिस्ट को बेइज्जत करने जैसा है। उन्होंने चेतावनी देते हुए लिखा कि यदि इस गलती को फौरन नहीं सुधारा गया, जिसमें रिलीज होने वाला मेन सॉन्ग भी शामिल है। मैं इस गाने को रिजेक्ट कर दूंगा और ये फैसला लूंगा, कि मेरी आवाज देश के कानून के सामने सुनी जाए। बहुत ही शर्मनाक है ये। ये पोस्ट उन्होंने मेकर्स और प्रोडक्शन हाउसेस को टैग करते हुए लिखी है।

24 जनवरी को फिल्म स्काई फोर्स सिनेमाघरों में रिलीज को तैयार है। इसमें अक्षय कुमार, निमरत कौर जैसे स्टारकास्ट है। फिल्म में वीर पहाड़िया की पत्नी के रूप में सारा अली खान नजर आएंगी, तो अक्षय कुमार भारतीय वायुसेना के अधिकारी की भूमिका में दिखेंगे। निमरत कौर भी इस फिल्म का हिस्सा होंगी। संदीप केवलानी और अभिषेक कपूर ने इसे डायरेक्ट किया है। जियो स्टूडियो, मैडॉक फिल्म्स, सारेगामा ग्लोबल, कि इस गाने को न सिर्फ गाया गया है और कम्पोज किया गया है, बल्कि

उम्मीदों से भरा होगा हिंदी सिनेमा का नया साल

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक हैं।

नया साल सबके लिए नई उम्मीद लेकर आता है। फिल्म वालों के लिए तो नए साल से ढेरों उम्मीदें बंधी होती है। क्योंकि, उनका सारा दारोमदार और मेहनत फिल्म की हिट से ही जुड़ी होती है। यह नया साल भी उम्मीदों का पिटारा लेकर आया, जिसमें कई फिल्में हैं जो कलाकारों, निर्देशकों के साथ कई लोगों के सपनों को पूरा करेंगी। बीते साल हॉरर-कॉमेडी जैसे नए जॉनर ने दर्शकों का खूब मनोरंजन किया और बॉक्स ऑफिस पर सफलता का डंका बनाया। इस साल फिर वही ट्रेंड अपना असर दिखाएगा या दर्शकों का मूड बदलेगा, यह तय होना बाकी है। लेकिन, सलमान खान सिकंदर से फिर अपने रंग में हैं। जबकि, शाहरुख खान और रणवीर कपूर की इस साल कोई फिल्म नहीं दिखाई देगी। वैसे तो नया साल वैसे तो तारीखों का सिलसिला होता है, लेकिन अलग-अलग पेशे और काम धाम में इसका महत्व कुछ अलग होता है। सिनेमा में भी नया साल कुछ अलग अंदाज रखता है।

यह साल हिंदी फिल्मों के नजरिए से बहुत महत्वपूर्ण समझा जा सकता है। इनसे न सिर्फ फिल्म इंडस्ट्री की दिशा तय होगी, बल्कि साल भर में आने वाली फिल्मों से यह भी देखने को मिलेगा कि क्या साउथ की फिल्मों का हिंदी फिल्मों पर दबदबा कायम रहेगा या नए चेहरे और नए ट्रेंड का जादू चलेगा। इसके बाद यह भी तय होने वाला है, कि हिंदी फिल्मों में कौन कैसा रंग जमाएगा। खास बात यह कि इसकी झलक जनवरी से ही मिलनी शुरू हो गई। इसके बाद दिसंबर तक रिलीज होने वाली फिल्मों की कतार में हिंदी सिनेमा की आस टिकी है। क्योंकि, हर साल नए ट्रेंड की फिल्में दर्शकों को आकर्षित करती है। 2023 में शाहरुख खान की पठान और जवान के अलावा सनी देओल की गदर-2 जैसी एक्शन फिल्मों ने धूम मचाई थी। 2024 में दर्शकों बदलती और हॉरर-कॉमेडी वाली फिल्मों ने माहौल बनाया। स्त्री-2, भूल भुलैया-3 और मुंज्या ने दर्शकों का मनोरंजन किया। अब नए साल में नजारा क्या होगा, फिलहाल में कुछ कहा नहीं जा सकता। लेकिन, लगता नहीं कि हॉरर-कॉमेडी और एक्शन अभी जाएगा। ये 2025 में कायम रहे तो आश्चर्य नहीं होना चाहिए।

नए साल के पहले महीने जनवरी को दिलचस्प बनाने की फिल्मकारों ने पूरी तैयारी कर ली। पहले महीने में जो बड़ी फिल्में आने वाली है उनमें सोनू सूद की एक्शन फिल्म फतेह, साउथ स्टार राम चरण की गेम चेंजर, कंगना रनौत की इमरजेंसी और अक्षय कुमार की स्काई फोर्स का नाम है। इन फिल्मों के लिए दर्शकों में क्रेज देखा जा रहा है। इस महीने सिनेमाघरों में 12 फिल्में रिलीज होने वाली है। इनमें हिंदी से लगाकर साउथ तक की कई फिल्में हैं। लेकिन, इनमें चार फिल्में हिंदी की भी हैं। कुछ फिल्में ऐसी हैं, जो एक-दूसरे के साथ बॉक्स ऑफिस पर भी टकराएगी। हिंदी की इमर्जेन्सी और आजाद ऐसी ही फिल्में हैं, जो 17 जनवरी को आमने-सामने होंगी। इन दोनों के अलावा तीसरी हिंदी फिल्म फतेह है जो 10 जनवरी को सिनेमाघरों में उतरेगी। कंगना रनौत की हिंदी फिल्म इमरजेंसी अब 17 जनवरी को आएगी। इस फिल्म की रिलीज तारीख पहले भी दो बार आगे बढ़ चुकी है। अजय देवगन की आजाद भी इसी दिन मुकाबले में आ रही है। अक्षय कुमार की हिंदी फिल्म स्काई फोर्स 24 जनवरी को आएगी।

जहां तक साल भर में आने वाली नई फिल्मों का सवाल है, तो इस साल रवीना टंडन की बेटी राशा और अजय देवगन के भांजे अमन 'आजाद' के जरिए बड़े परदे पर उतरने जा रहे हैं। अमन ने भी अपने मामा की तरह एक्शन फिल्मों से ही अपनी शुरुआत करना तय किया है। प्रदीप रंगनाथन की तमिल फिल्म लव टुडे की रीमेक 'लवयापा' से आमिर खान के बेटे जुनैद दर्शकों के सामने आ रहे हैं। वैसे तो उनकी पहली फिल्म 'महाराज' है, लेकिन वो ओटीटी पर रिलीज हुई। इस फिल्म से बोनी कपूर की बेटी खुशी बड़े परदे पर डेब्यू कर रही है। साल की सबसे बड़ी और बहुप्रतीक्षित सलमान खान की फिल्म सिकंदर ईद पर आएगी। एआर मुरुगदास की इस फिल्म में सलमान का धांसू एक्शन अवतार दिखेगा। इसका अंदाजा उसके टीजर से हो चुका है। इस फिल्म में पुष्पा सीरीज की हीरोइन रश्मिका मंदाना भी लीड रोल में है। सनी देओल की अगली फिल्म जाट है। रेजिना कसांड्रा और सैयामी खेर फिल्म हीरोइन हैं और रणदीप हुड्डा, विनीत कुमार सिंह व उपेंद्र लिमये जैसे कलाकार भी फिल्म में हैं। अजय देवगन की आने वाली दूसरी फिल्म 'रेड 2' होगी। छापेमारी पर पहले आई फिल्म की ही इसके दूसरे भाग में आगे बढ़ाया गया है। फिल्म की वाणी कपूर, रितेश देशमुख और रजत कपूर भी हैं।

कुछ सालों से अक्षय कुमार के सितारे गर्दिश में हैं। इस साल उनकी पहली फिल्म जून में 'हाउसफुल-5' रिलीज होगी। इस फिल्म में कलाकारों की भीड़ है। ये हैं जैकलीन फर्नांडीज, रितेश देशमुख, जैकी श्रॉफ, संजय दत्त, अभिषेक बच्चन, नरगिस फखरी, नाना पाटेकर, डीनो मोरिया और फरदीन खान। सिद्धार्थ मल्होत्रा और जाह्नवी कपूर की फिल्म परम सुंदरी भी इसी साल आएगी। वॉर के बाद ऋतिक रोशन के साथ साउथ के सुपरस्टार जूनियर एनटीआर अब 'वॉर 2' में नजर आएंगे। टाइगर श्रॉफ को अपना करियर बचाने का मौका बागी-4 से मिलेगा। टाइगर की 2019 के बाद से कोई फिल्म हिट नहीं हुई। इस फिल्म से पूर्व विश्व सुंदरी हरनाज संधू हिंदी फिल्मों में डेब्यू कर रही हैं। उनके साथ पंजाबी फिल्मों की हीरोइन सोनम बाजवा और संजय दत्त भी दिखाई देंगे। अभिनेता वरुण धवन की फिल्म है जवानी तो इश्क होना है से बहुत कुछ तय होना है। अपने पिता डेविड धवन निर्देशित इस फिल्म पर बहुत कुछ निर्भर है। इस फिल्म की हीरोइन पूजा हेगड़े है, जिनकी फिल्म को लंबे समय से हिट का इंतजार है। इस साल अजय देवगन की तीसरी फिल्म 'दे दे प्यार दे 2' आएगी जिसमें वे रकुल प्रीत सिंह के साथ एक अलग अंदाज की प्रेम कहानी में नजर आएंगे। उनके साथ आर माधवन और अनिल कपूर भी दिखाई देंगे। इस साल क्रिसमस पर यशराज स्पाई यूनिवर्स की फिल्म अल्फा' पहली महिला प्रधान फिल्म है, जिसमें आलिया भट्ट और शरवरी वाघ हैं। शिव रवैल इस फिल्म से बड़े परदे पर शुरुआत करेंगे।

बीते साल हॉरर कॉमेडी फिल्में स्त्री-2, भूलभुलैया-3 और मुंज्या की सफलता के बाद हॉरर कॉमेडी फिल्मों का ट्रेंड फिल्मों में आता दिखाई दिया। इस साल भी इस जॉनर की दो बड़ी फिल्में आएंगी। ये हैं आयुष्मान खुराना की थामा और प्रभास की राजा साब जो हॉरर कॉमेडी। इसके अलावा सीक्वल फिल्मों के बॉक्स ऑफिस कलेक्शन को देखते हुए कई सीक्वल फिल्में घोषित हुई। इस साल धड़क-2, सितारे जमीन पर, जॉली एलएलबी-3, हाउसफुल-5, खेलकम टु जंगल, वॉर-2, रेड और बागी-4 समेत कई सीक्वल फिल्में परदे पर दिखाई देने वाली है। फिल्मों में बायोग्राफी की वापसी का ट्रेंड भी दिखाई दिया। फरहान अख्तर की 120 बहादुर में परमवीर चक्र विजेता मेजर शैतान सिंह की बहादुरी दिखाई देगी। जबकि, इक्कीस में परमवीर चक्र विजेता सेकंड लेफ्टिनेंट अरुण क्षेत्रपाल की जांबाजी के किस्से होंगे। इमरजेंसी में कंगना रनौत इंदिरा गांधी की भूमिका में दिखाई देगी। इस साल में परदे पर कॉमेडी की भी कई फिल्में मनोरंजन करेंगी। इनमें अक्षय कुमार की हाउसफुल-5 से खेलकम-3 तक हैं। वहीं है जवानी तो इश्क होना है से कॉमेडी डायरेक्टर डेविड धवन की वापसी हो रही है। फिल्म इंडस्ट्री ने पद्मावत और बाजीराव मस्तानी जैसी इतिहास आधारित फिल्में दी। लेकिन, ऐसी फिल्मों को लेकर विवाद भी होते रहे। इस साल विकी कौशल की फिल्म छावा कतार में है।

सलमान खान की टाइगर-3 के बाद परदे से बाहर थे। अब वे फिल्म सिकंदर से वापसी करने वाले हैं। जबकि, 2022 में फिल्म लाल सिंह चड्ढा के फ्लॉप होने के बाद आमिर खान ने फिल्मों से लंबा ब्रेक लिया था। इस साल सितारे जमीन पर से उनकी वापसी होना थी। लेकिन, अब शायद ये फिल्म अगले साल बड़े पर्दे पर आएगी। 2023 में शाहरुख खान की दो फिल्मों पठान और जवान ने बॉक्स ऑफिस पर कमाई का तूफान मचा दिया था। लेकिन, 2024 में उनकी कोई फिल्म नहीं आई। इस साल भी दर्शकों को उनकी फिल्म का इंतजार रहेगा। उनकी अगली फिल्म अब 2026 में परदे पर नजर आएगी। सिर्फ वही नहीं इस साल रणबीर कपूर भी दर्शकों को दिखाई नहीं देंगे। उनकी फिल्म एनिमल को काफी पसंद किया गया था। पहले उम्मीद थी कि उनकी कोई फिल्म इस साल आएगी, पर उनकी आने वाली फिल्म रामायण होगी, जो अब अगले साल (2026) ही आएगी। सनी देओल ने अपनी फिल्म गदर-2 से बॉक्स ऑफिस पर गदर मचाया था। उसके बाद से दर्शकों को उनकी अगली फिल्म का इंतजार है। इस साल उनकी जाट और लाहौर 1947 रिलीज होगी।

15 अगस्त 2024 को तीन फिल्में स्त्री 2, खेल खेल में और वेदा एक साथ परदे पर उतरी थी। इस साल भी इसी दिन तीन फिल्में वॉर-2, द दिल्ली फाइल्स और कार्तिक आर्यन की नै फिल्मों में टकराव होगा। सिर्फ यही नहीं, अप्रैल में सनी देओल की जाट के सामने अक्षय कुमार की जॉली एलएलबी-3 और जून में कमल हासन की ठग लाइफ और हाउसफुल-5 एक-दूसरे को टक्कर देंगी। दशहरे पर कांतारा-2 के सामने वरुण धवन की है जवानी तो इश्क होना है टकराएगी। पिछले साल दिवाली पर रोहित शेट्टी की अजय देवगन स्टारर सीक्वल फिल्म सिंघम अगेन ने उम्मीद के मुताबिक कलेक्शन नहीं किया। लेकिन, इस साल वे अपनी दो हिट फिल्मों के सीक्वल रेड-2 और दे दे प्यार-2 लेकर आने वाले हैं। अक्षय कुमार को भी इस साल अपनी फिल्मों से बहुत उम्मीद है। वे इस साल नए कलेवर में जोरदार वापसी करने वाले हैं। इस साल उनकी स्काई फोर्स, शंकरा, जॉली एलएलबी 3, हाउसफुल-5 और खेलकम टू जंगल जैसी फिल्में आने वाली है। देशभक्ति वाली फिल्में हमेशा का ट्रेंड रहा है। इस साल भी ऐसी कहानियों का बोलबाला रहेगा। साल की शुरुआत ही स्काई फोर्स जैसी फिल्म से हो रही है। साल के अंत में फरहान अख्तर की 120 बहादुर आएगी। इसके अलावा लाहौर 1947 और इक्कीस जैसी फिल्में भी दर्शकों के मनोरंजन की कतार में है।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

फिल्मों के नाम में रोटी, पर परदे पर कभी नहीं

अशोक जोशी

सिनेमा का उद्देश्य मनोरंजन करना होता है। लेकिन, कम ही लोगों ने विचार किया होगा कि इससे लाखों लोगों की रोजी-रोटी जुड़ी होती है। सिनेमा न केवल फिल्मी कलाकारों, गीतकारों, संगीतकारों, गायक,

निर्माता, निर्देशकों और तकनीशियनों जिंदगी चलाती है। बल्कि, लाईटमैन से लेकर स्पॉट ब्वाइज और एक्स्ट्रा कलाकारों से लेकर सिनेमा हॉल के गेटकीपर तक को भी दाना-पानी यहीं से उपलब्ध होता है। लेकिन, परदे पर जब भी रोटी का जिक्र आया, रोटी गायब ही रही।

सिनेमा को मनोरंजन के साथ मनोभावों की अभिव्यक्ति का भी एक महत्वपूर्ण साधन माना गया है। खाने-पीने के प्रति फिल्मकारों के दिलों में भावनाएं दबी होती है, जो कभी कभार पर्दे पर प्रभावशाली दृश्यों, कथानक, शीर्षकों और गानों में दिखाई देती है। देखा जाए तो इस दुनिया में सारे झगड़े रोटी को लेकर ही होते हैं। हमारे पहले के फिल्मकारों ने जिन्होंने फाका मारते हुए संघर्ष कर अपनी राह बनाई, उन्होंने रोटी को केन्द्र में रखकर फिल्मों का निर्माण किया। इन फिल्मों में महबूब खान की फिल्म रोटी का उल्लेख करना जरूरी है। फिल्म का नायक अपराधी है, जो रोटी की खातिर ही अपराधी बनता है। बाद में वो इतना मालामाल हो जाता है कि रोटी को भूल जाता है। क्योंकि, तब उसे रोटी से ज्यादा धन और सोने चांदी की भूख होती है। फिल्म के क्लाइमेक्स में जब वह मरता है, तो उसके हाथ में रोटी ही होती है। इसी भावना पर आधारित है गीत दीवाना आदमी को बनाती है रोटियां!

इसके बाद कई फिल्मों में रोटी के लिए संघर्ष करते नायक दिखाई देते हैं। आवारा में भी जब राज कपूर जेल में जाते हैं, तो वहां रोटी के लिए कतार में लगते हैं। जब रोटी उनके हाथ में आती है, तो उसे देखकर कहते है यदि तू मुझे पहले ही मिल जाती, तो आज मैं यहां नहीं होता! रोटी के लिए संघर्ष करते हुए एक मार्मिक दृश्य सलीम जावेद ने फिल्म दीवार में भी था। इस फिल्म में एक लड़का एक दुकान से कुछ चोरी करके भागता है। पुलिस इंस्पेक्टर शशि कपूर उसका पीछा करते हुए उसे रुकने को कहता है। जब वह नहीं रुकता तो उसे गोली मार दी जाती है। जब शशि कपूर उसके पास पहुंच कर देखता है तो उस मरणासन्न बच्चे के हाथ में ब्रेड होती है, जो वह अपने भूखे परिवार का पेट भरने के लिए चोरी कर भाग रहा होता है।

इसी रोटी पर मनमोहन देसाई ने एक सुपरहिट फिल्म रोटी बनाई थी, राजेश खन्ना और मुमताज की इस फिल्म में रोटी का कहीं उल्लेख नहीं था। इसी तरह की फिल्मों में देवेन वर्मा की दाना-पानी, सोहन लाल कंवर की पापी पेट का सवाल है, मनोज कुमार की रोटी कपड़ा और मकान जैसी फिल्में भी है जिनमें रोटी को गौण कर व्यावसायिकता को उभारा गया। इन फिल्मों में रोटी को छोड़कर गाने, मारधाड़ और बलात्कार जैसे उत्तेजक दृश्य सभी कुछ थे। फिल्म बावर्ची में घर में रोटी बनाने वाला राजेश खन्ना खाना कम बनाता था, परिवार के झगड़े ज्यादा सुलझाता था।

कुछ कलाकार ऐसे भी हैं, जो खाने पीने में अपने आपको नियंत्रित रखते थे। इसके बावजूद इनकी फिल्मों में खाने-पीने के दृश्य बहुत फिल्माए गए। इन कलाकारों में देव आनंद का अव्वल नम्बर पर है। वे क्या खाते थे, कितना खाते थे यह कई लोगों के लिए खोज या उत्सुकता का विषय रहा। उनके बरसों पुराने ड्राइवर मोहन दुबे ने बताया था कि वह खाने के प्रति इतनी संतुलित थे, कि रात को केवल एक सूखी रोटी और सब्जी खाते थे। वह अपनी ज्यादातर फिल्मों जैसे देस परदेस, बारिश, लश्कर, जब प्यार किसी से होता है, गाइड, लव मैरिज, माया, प्रेम पुजारी, काला बाजार सभी में वह अपने आपको खाना खाते दिखाया था। राजश्री की फिल्मों में तो पूरा परिवार एक साथ डाइनिंग टेबल पर ही बैठा दिखाई देता था।

हिंदी फिल्मों को चलाने में गानों का बहुत बड़ा योगदान रहा है। इस लिहाज से यदि यह कहा जाए कि गाने फिल्मों के लिए दाना पानी का काम करते है, तो गलत नहीं होगा। यही कारण है कि गीतकारों ने समय समय पर खाने से संबंधित गीत लिखकर उन्हें लोकप्रिय बनाया। दीवाना आदमी को बनाती है रोटियां से शुरू हुई यह कवायद आज तक जारी है। बस खाने पीने के सामान समय के साथ साथ बदल गए है। रोटी के अलावा अब गीतों में चॉकलेट, समोसे से लेकर आइसक्रीम सब कुछ शामिल हो गया।

ज्वार भाटा में धर्मेंद्र और सायरा बानो भंडारा करते हुए गाते हैं दाल रोटी खाओ प्रभु के गुण गाओ। नीलकमल में महमूद को खाली डिब्बा गीत में गरम मसाले की याद आती है। गरम मसाले से उन्हें इतना लगाव था कि उनकी एक फिल्म का नाम भी गरम मसाला ही रखा। इंकार के एक गीत में हेलन थिरकते हुए कहती है गुड़ की डली मंगता है तो आ जा। बात यहीं नहीं खत्म नहीं होती। कभी अफगान जलेबी की बात होती है, तो कभी डबल धमाल में मल्लिका शेरावत अपने आपको जलेबी बाई बनकर पेश करती है।

किसी किसी फिल्मकार को खाने से ज्यादा लड्डू पसंद आए, तो गीत बन गए। तुम्हारी होगी शादी मिलेंगे लड्डू हमको, मेरी भैंस को डंडा क्यों मारा ,वो लड्डू पेड़ खाती है। कार्तिक आर्यन और कृति सेनन को कोका कोला याद आया। ऐश्वर्या निम्बूडा निम्बूडा कहकर फिल्म को हिट करा ले गई। कहीं कहा गया कि तुझको मिर्ची लगी तो मैं क्या करूं। माधुरी दीक्षित चने के खेत में नाचती दिखाई दी, इससे पहले संगम में वैजयंती माला को मैं का करूं राम में गोभी का फूल याद आया था।

राजश्री की फिल्मों में खाने के दृश्यों के साथ गानों में भी खाने पीने का उल्लेख होता रहा है। लोकप्रिय गीत दीदी तेरा देवर दीवाना में भी दाना डालने की बात कही गई है। इसी गीत के अंतरे में इमली से लेकर छुआरे और खरबूजा से लेकर निम्बू तक की बात कही गई। रोटी कपड़ा और मकान में रोटी को भूल जाने वाले मनोज कुमार को शोर में रोटी याद आई तो गीत में कह दिया इस दुनिया में जीने वाले ऐसे भी हैं जीते रुखी सूखी खाते और ठंडा पानी पीते! एक गीत में अंडे की महिमा का गुणगान करते हुए अंडे का फंडा सुनाया गया है।

फिल्मों में आने से पहले बावर्ची रहे अक्षय कुमार फिल्मों में आने के बाद भी खानपान को नहीं भूले उनकी खिलाड़ी सीरीज की एक फिल्म में उन्हें याद आया जब तक रहेगा समोसे में आलू। कहने का मतलब यह है जब तक फिल्में बनती और चलती रहेगी यह फिल्मों से जुड़े लोगों के पेट तो भरती रहेंगी। साथ में दर्शकों को भी रोटी दिखा दिखाकर बॉक्स ऑफिस की खिड़कियां तोड़ती रहेंगी और आलोचकों से कहती रहेंगी तुझको मिर्ची लगी तो मैं क्या करूं!

युवा मिशन

— एक विचार ले लो, उसी को सोचो, उसी का स्वप्न देखो, उसी पर अवलम्बित रहो। अपने मस्तिष्क, मांसपेशियों, स्नायुओं और शरीर के प्रत्येक भाग को उसी विचार से ओत–प्रोत होने दो। यही सफलता का रास्ता है। यही वह मार्ग है, जिसने महान पुरुषों का निर्माण किया है।

– स्वामी विवेकानंद

सशक्त, क्षमतावान और
आत्मनिर्भर युवाओं का
प्रदेश बनेगा **मध्यप्रदेश**

स्वामी विवेकानंद
युवा शक्ति मिशन
का शुभारंभ

मुख्यमंत्री
डॉ. मोहन यादव
द्वारा

12 जनवरी, 2025 । प्रातः 11:30 बजे

रवीन्द्र भवन, भोपाल

डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

मिशन के प्रमुख उद्देश्य

- युवाओं के समग्र विकास पर केन्द्रित गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, उद्यमिता और रोज़गार क्षमता का निर्माण
- वैश्विक प्रतिस्पर्धा के मानकों के अनुसार कौशल एवं तकनीकी विकास
- तकनीक के अधिकाधिक उपयोग एवं अनुसंधान तथा विचारशीलता को बढ़ावा
- नशे से दूरी एवं स्वस्थ जीवनशैली को प्रोत्साहन
- भारतीय ज्ञान परंपरा, पर्यावरण संरक्षण, खेल एवं संस्कृति के क्षेत्र में भागीदारी बढ़ाना
- समाज में सक्रिय भागीदारी के साथ अर्थव्यवस्था में सम्मानजनक स्थान सुनिश्चित करना
- प्रत्येक जिले में एमएसएमई औद्योगिक पार्क का विकास एवं स्टार्टअप्स को बढ़ावा देकर रोज़गार के अवसर सुगम बनाना

प्रदेश स्तरीय
सामूहिक सूर्य नमस्कार

प्रात: 9:30 बजे से 10:30 बजे तक

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की गरिमामयी सहभागिता

सुभाष उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, भोपाल

D-11151/24
मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

सीधा प्रसारण Webcast.gov.in/mp/cmevents @Cmmadhyapradesh @jansampark.madhyapradesh @Cmmadhyapradesh @jansamparkMP JansamparkMP

#युवा_शक्ति_मिशन_MP

जनसम्पर्क : म.प्र. शासन/2025